राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड,
जयपुर द्वारा आयोजित

AKSHANSH PUBLICATION

CET
10+2 एवं स्नातक स्तर

राजस्थान का भूगोल

नवीनतम परीक्षा पैटर्न पर आधारित
अभिकथन-कारण, युग्म, सुमेलित, सत्य- असत्य प्रश्नों के पैटर्न पर

सारगर्भित प्रश्नोत्तरों का संकलन

VOLUME 10

THEORY+ MCQ+PYQ

एक ही पुस्तक में

2023 एवं 2024 में आयोजित
(CET 10+2 एवं स्नातक स्तर - सभी SHIFT) राजस्थान भूगोल
के PYQ प्रश्नों का हल सहित समावेश

S.K. Sir

अक्षांश पब्लिकेशन
M. 9079798005, 6376491126
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur

व्याख्यात्मक हल
लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
के यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध

AKSHANSH PUBLICATION

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर द्वारा आयोजित

CET

10+2 एवं स्नातक स्तर

राजस्थान का भूगोल

THEORY+ MCQ+PYQ

VOLUME 10

"अक्षांश प्रकाशन की समस्त पुस्तकें लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर के अनुभवी शिक्षकों के मार्गदर्शन एवं अक्षांश प्रकाशन की समर्पित टीम के सहयोग से तैयार की गई हैं।"

संपादक

S.K. सर

सह संपादक

गंगासिंह, अनोपचंद मंडा

प्रकाश, सुमेर प्रजापत

प्रकाशन

अक्षांश प्रकाशन, उदयपुर (राज.)

नोट :- अब लक्ष्य क्लासेज़ की सभी आगामी पुस्तकें केवल 'अक्षांश प्रकाशन' के माध्यम से ही प्रकाशित की जाएंगी। ये सभी पुस्तकें बाजार में 'अक्षांश' नाम से ही उपलब्ध होंगी। विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि आगामी समय में 'लक्ष्य' नाम से कोई भी पुस्तक प्रकाशित नहीं की जाएगी। इसलिए कृपया पुस्तक खरीदते समय केवल 'अक्षांश प्रकाशन' के नाम से प्रकाशित और अधिकृत पुस्तकें ही बुक स्टोर्स से प्राप्त करें, ताकि आपको प्रमाणिक, अद्यतन एवं परीक्षा-उपयुक्त सामग्री प्राप्त हो।भविष्य में 'लक्ष्य' नाम से प्रकाशित किसी भी पुस्तक की सामग्री या गुणवत्ता की जिम्मेदारी 'अक्षांश प्रकाशन' या 'लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर' की नहीं होगी।

प्रकाशन

अक्षांश प्रकाशन

Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle,
Main Road, Udaipur

लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर से जुड़ने के लिए QR CODE स्कैन करे

TELEGRAM | INSTAGRAM | YOUTUBE | FACEBOOK | WHATSAPP

बुक कोड - AP0131

©सर्वाधिकार - अक्षांश प्रकाशन
lakshyaclassesudr@gmail.com

मुख्य वितरक - लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
M. 9079798005, 6376491126

इस पुस्तक में दी गई सभी जानकारियाँ, तथ्य और सूचनाएँ सावधानीपूर्वक सत्यापित की गई हैं। फिर भी यदि किसी जानकारी या तथ्य में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसके लिए प्रकाशक, संपादक या मुद्रक जिम्मेदार नहीं होंगे।

हमारा विश्वास है कि इस पुस्तक की सामग्री लेखकों द्वारा मौलिक रूप से तैयार की गई है। यदि किसी प्रकार का कॉपीराइट उल्लंघन सामने आता है, तो उसकी जिम्मेदारी प्रकाशक की नहीं होगी।

सभी विवादों के निपटारे के लिए न्यायिक क्षेत्र उदयपुर रहेगा।

अक्षांश प्रकाशन ने इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्त्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित सभी प्रकार की सामग्री पूर्णतः तथ्यात्मक विश्लेषण पर आधारित है। इस पुस्तक के किसी भी भाग और सामग्री को अक्षांश प्रकाशन की अनुमति और जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशित या प्रिन्ट करना अनुचित है, यदि ऐसा पाया जाता है तो व्यक्ति या संस्थान स्वयं जिम्मेदार है।

विषय वस्तु

क्र.	अध्याय	10+2	स्नातक	पृष्ठ संख्या
1.	स्थिति एवं विस्तार	✓	✓	1 – 10
2.	भौतिक विस्तार	✓	✓	11 – 24
3.	जलवायु	✓	✓	25 - 29
4.	अपवाह तंत्र	✓	✓	30 – 38
5.	झीलें	✓	✓	39 - 42
6.	जल संरक्षण तकनीक	✓	✓	43 - 45
7.	मृदा	✓	✓	46 – 50
8.	प्राकृतिक वनस्पति	✓	✓	51 – 56
9.	वन्यजीव अभयारण्य एवं संरक्षण	✓	✓	57 – 62
10.	सिंचाई परियोजना	✓	✓	63 - 70
11.	खनिज संपदा	✓	✓	71 - 83
12.	पशु संपदा	✓	✗	84 - 90
13.	जनसंख्या	✓	✓	91 - 94
14.	प्रमुख जनजातियाँ	✓	✓	95 – 97
15.	पर्यटन	✓	✓	98 – 106
16.	रबी एवं खरीफ की प्रमुख फसलें	✗	✓	107 – 114
17.	ऊर्जा संसाधन	✗	✓	115 – 121
18.	यातायात के साधन एवं परिवहन	✗	✓	122 – 132
19.	CET 10+2 स्तर विगत वर्षों के प्रश्न	✓	✗	133 – 136
20.	CET स्नातक स्तर विगत वर्षों के प्रश्न	✗	✓	137 – 141

❑ ❑ ❑ ❑

स्थिति एवं विस्तार 01

41 जिलों व 7 संभागों सहित राजस्थान का मानचित्र

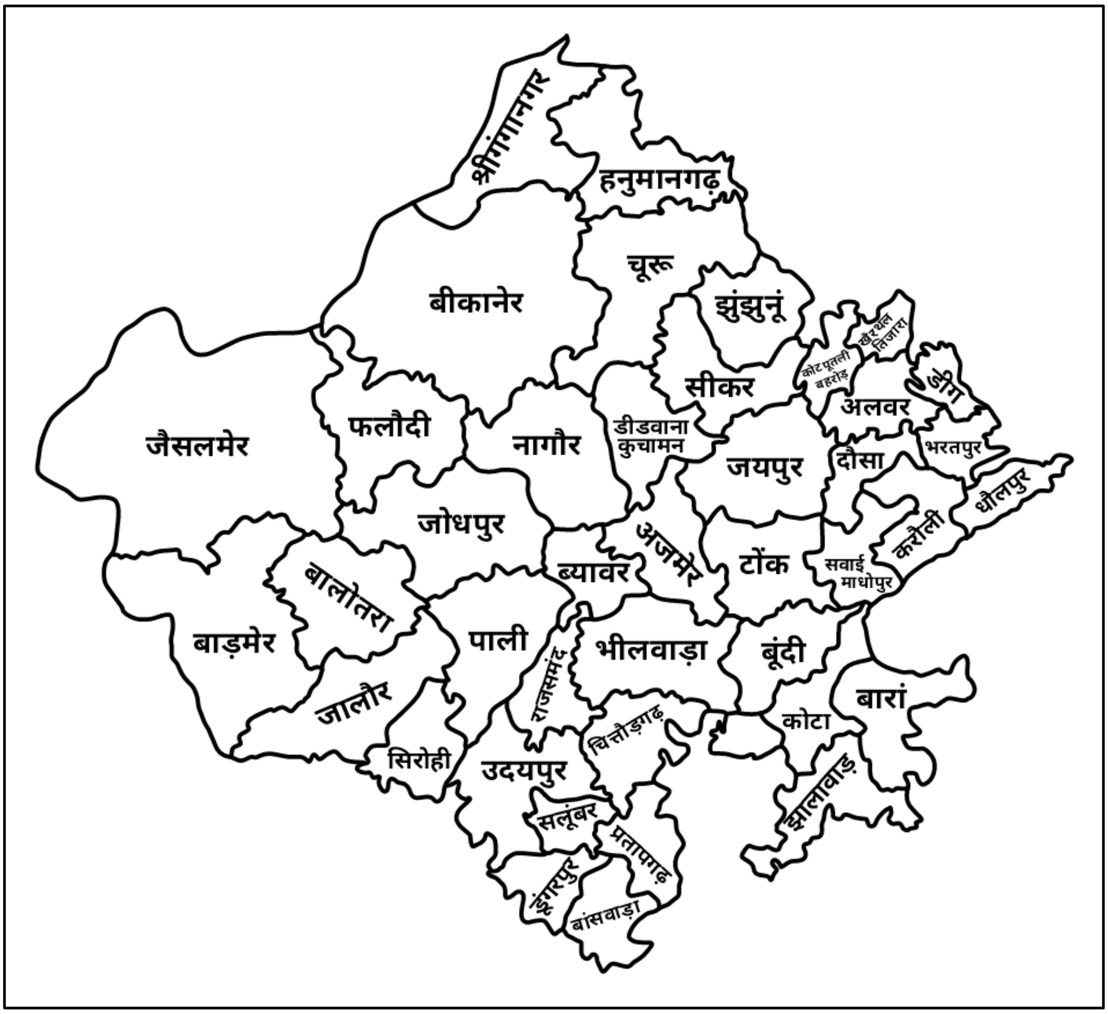

राजस्थान का नामकरण

❖ **राजस्थानादित्य -**

◈ राजस्थान के लिए यह शब्द **बसंतगढ शिलालेख (सिरोही)** से विक्रम संवत **682 या 625 ई.** में प्राप्त हुआ।

◈ यह शिलालेख **चावड़ा वंश** के राजा **वर्मलात** के द्वारा उत्कीर्ण करवाया गया था।

❖ **मरूकान्तर -**

◈ रामायण में **महर्षि वाल्मीकि** के द्वारा राजस्थान के लिए **"मरूकान्तर"** शब्द का प्रयोग किया था।

❖ **ब्रह्मवर्त -**

◈ वैदिक काल में इसे **ब्रह्मवर्त** नाम से जाना जाता था।

◈ वैदिक काल में यहाँ पर **दृषद्वती या सरस्वती** नदी का प्रवाह होने का उल्लेख मिलता है।

❖ **राजपूताना -**

◈ इस शब्द का उल्लेख सर्वप्रथम **जॉर्ज थॉमस (आयरलैण्ड)** ने 1800वीं सदी में किया था। प्रारंभ में यह सब मौखिक रूप से दिया गया।

◈ **'विलियम फ्रेंकलिन'** ने अपनी पुस्तक **'मिलिट्री मेमॉयर्स ऑफ जॉर्ज थॉमस' (1805)** में राजपूताना शब्द का लिखित प्रमाण दिया है।

❖ **राजस्थान, रायथान, रजवाड़ा -**

◈ 1829 ई. में **कर्नल जेम्स टॉड (इंग्लैंड)** द्वारा लिखित पुस्तक **'एनल्स एण्ड एंटीक्वीटीज ऑफ राजस्थान'** या **'द सेण्ट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट ऑफ इण्डिया'** में सर्वप्रथम राजस्थान के लिए इन शब्दों का प्रयोग किया।

◈ **गुरू का नाम - यतिज्ञानचंद्र**

❖ **कर्नल टॉड के उपनाम -**

1. घोड़े वाला बाबा
2. राजपूताने के इतिहास का पितामह

◈ **कर्नल टॉड** ने सर्वप्रथम सामन्तवादी व्यवस्था पर टिप्पणी की।

◈ वर्तमान स्वरूप में **राजस्थान** शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग एकीकरण के **दूसरे चरण** (25 मार्च, 1948) में किया गया।

◈ अंतिम रूप से 26 जनवरी, 1950 को राजस्थान को संवैधानिक / कानूनी मान्यता प्रदान की गई।

नोट:- **मुहणोत नैणसी व वीरभान** नामक लेखकों ने भी अपनी पुस्तकों में **राजस्थान शब्द** का प्रयोग किया था, लेकिन इन्होनें यह स्पष्ट नहीं किया था कि यह शब्द किसके लिए दिया है।

राजस्थान का क्षेत्रफल

भारत में राजस्थान की भौगोलिक स्थिति

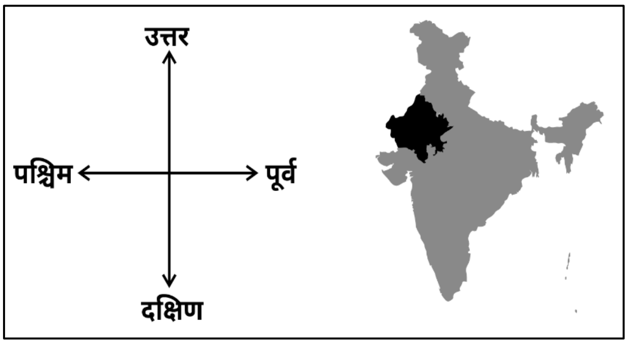

- इसका कुल क्षेत्रफल **3,42,239 वर्ग किलोमीटर** है, (**1,32,139 वर्ग मील**) जो भारत के कुल क्षेत्रफल का **10.41% या 1/10वाँ** भाग या **दसवाँ हिस्सा** है।
- विश्व के कुल क्षेत्रफल में राजस्थान का योगदान **0.25%** है।
- **15 नवम्बर, 2000** को मध्य प्रदेश से छत्तीसगढ़ राज्य के अलग होने से राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य बना।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत के पाँच बड़े राज्य क्रमशः राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और आन्ध्र प्रदेश है।
- **राजस्थान के बाद मध्य प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से दूसरा सबसे बड़ा राज्य है।**
  राजस्थान: 3,42,239 वर्ग किमी.
  मध्य प्रदेश: 3,08,245 वर्ग किमी.
  महाराष्ट्र: 3,07,713 वर्ग किमी.
  उत्तर प्रदेश: 2,40,928 वर्ग किमी.
- 5 नवम्बर, 2000 को बिहार से झारखण्ड अलग हुआ। 2 जून 2014 को आंध्रप्रदेश से तेलंगाना अलग हुआ, जो कि भारत का 29वाँ राज्य बना।
- **राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से बड़ा है:-**

राजस्थान का क्षेत्रफल बराबर है।	राजस्थान क्षेत्रफल में बड़ा है।
जापान, कांगो रिपब्लिक, फिनलैंड, जर्मनी, नार्वे एवं वियतनाम	इजराइल से 17 गुणा बेल्जियम से 11 गुणा
	श्रीलंका से 5 गुणा चेकोस्लोवाकिया से तीन गुणा
	स्वीट्जरलैण्ड से 8 गुणा ब्रिटेन से (1.5 /2 गुणा)

- **राजस्थान के क्षेत्रफल की दृष्टि से पाँच सबसे बड़े जिले -**

क्र.सं.	जिला	क्षेत्रफल
1.	जैसलमेर	38401 वर्ग किमी.
2.	बीकानेर	30239 वर्ग किमी.
3.	बाड़मेर	28387 वर्ग किमी.
4.	जोधपुर	22850 वर्ग किमी.
5.	नागौर	17718 वर्ग किमी.

- **जैसलमेर** भारत का **तीसरा सबसे बड़ा जिला** है
  1. कच्छ (गुजरात) – 45,674 वर्ग किमी.
  2. लेह (लद्दाख) – 45,110 वर्ग किमी.
  3. जैसलमेर (राजस्थान) – 38,401 वर्ग किमी.
- **जैसलमेर** जिला राज्य के कुल क्षेत्रफल का **11.22%** है जबकि **धौलपुर** जिले से यह **12.66 गुना** बड़ा है।
- राजस्थान का **सिरोही** जिला क्षेत्रफल व जनसंख्या में लगभग समान प्रतिशत रखता है। **(क्षेत्रफल - 1.5%, जनसंख्या - 1.51%)**
- **राजस्थान के क्षेत्रफल की दृष्टि से पाँच सबसे छोटे जिले -**

क्र.सं.	जिला	क्षेत्रफल
1.	धौलपुर	3033 वर्ग किमी
2.	दौसा	3432 वर्ग किमी
3.	डूंगरपुर	3770 वर्ग किमी
4.	प्रतापगढ़	4449 वर्ग किमी
5.	सवाई माधोपुर	4498 वर्ग किमी

- **धौलपुर** जिला राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का **0.8%** है।

नोट:- उक्त जिलों का क्षेत्रफल जिलो के पुनर्गठन से पहले की स्थिति के अनुसार है। नवीनतम आधिकारिक आँकडे जारी नहीं हुए है।

राजस्थान की स्थिति एवं विस्तार

- **राजस्थान की ग्लोबीय स्थिति -**
- **अक्षांशीय स्थिति -** अक्षांशीय दृष्टि से उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है।
- **देशांतरीय स्थिति -** देशांतरीय दृष्टि से पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है।
- एशिया महाद्वीप के सापेक्ष राजस्थान की स्थिति – दक्षिण-पश्चिम
- ग्लोब या विश्व के मानचित्र में राजस्थान की स्थिति **उत्तर-पूर्व (ईशान कोण)** में है।
- भारत में राजस्थान **उत्तर-पश्चिम दिशा तथा वायव्य कोण** पर स्थित है।
- **राजस्थान का अक्षांशीय एवं देशांतरीय विस्तार:-**

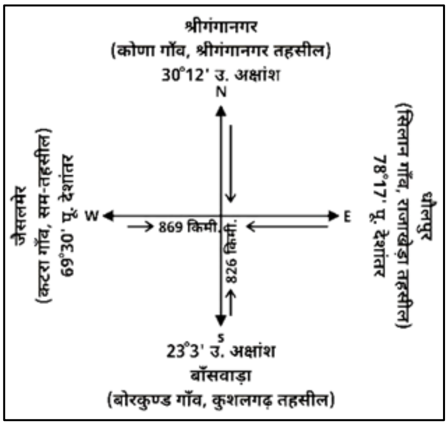

राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार

- राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार **23°03′** उत्तरी अक्षांश से **30°12′** उत्तरी अक्षांश तक है।
- राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार **7°9′** अक्षांशों के मध्य है।
- राजस्थान की उत्तर से दक्षिण लम्बाई **826 किलोमीटर/ 514** मील है।
- राजस्थान का उत्तरतम बिन्दु **कोणा गाँव, गंगानगर (तह.) श्रीगंगानगर** है।
- राजस्थान का दक्षिणतम बिन्दु **बोरकुण्ड, कुशलगढ़ (तह.) बाँसवाड़ा** है।

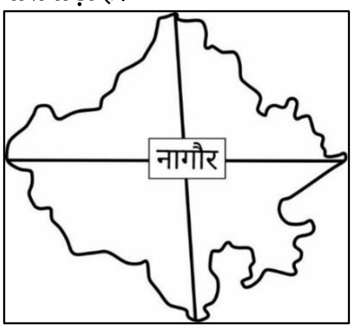

- **राजस्थान का मध्य बिन्दु –**
  जिला - नागौर
  तहसील - मेडता
  मध्य गाँव - लाम्पोलाई (नागौर)
  Note - सेटेलाइट सर्वे के अनुसार गगराना नागौर
- राजस्थान की उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम मध्य रेखाएँ नागौर जिले में एक-दूसरे को क्रॉस करती हैं।
- राजस्थान के उत्तर-दक्षिण तथा पूर्व-पश्चिम विस्तार का संतुलन इसी क्षेत्र के आसपास होने के कारण यह राज्य के भौगोलिक अध्ययन, मानचित्रण (Mapping) एवं सर्वेक्षण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

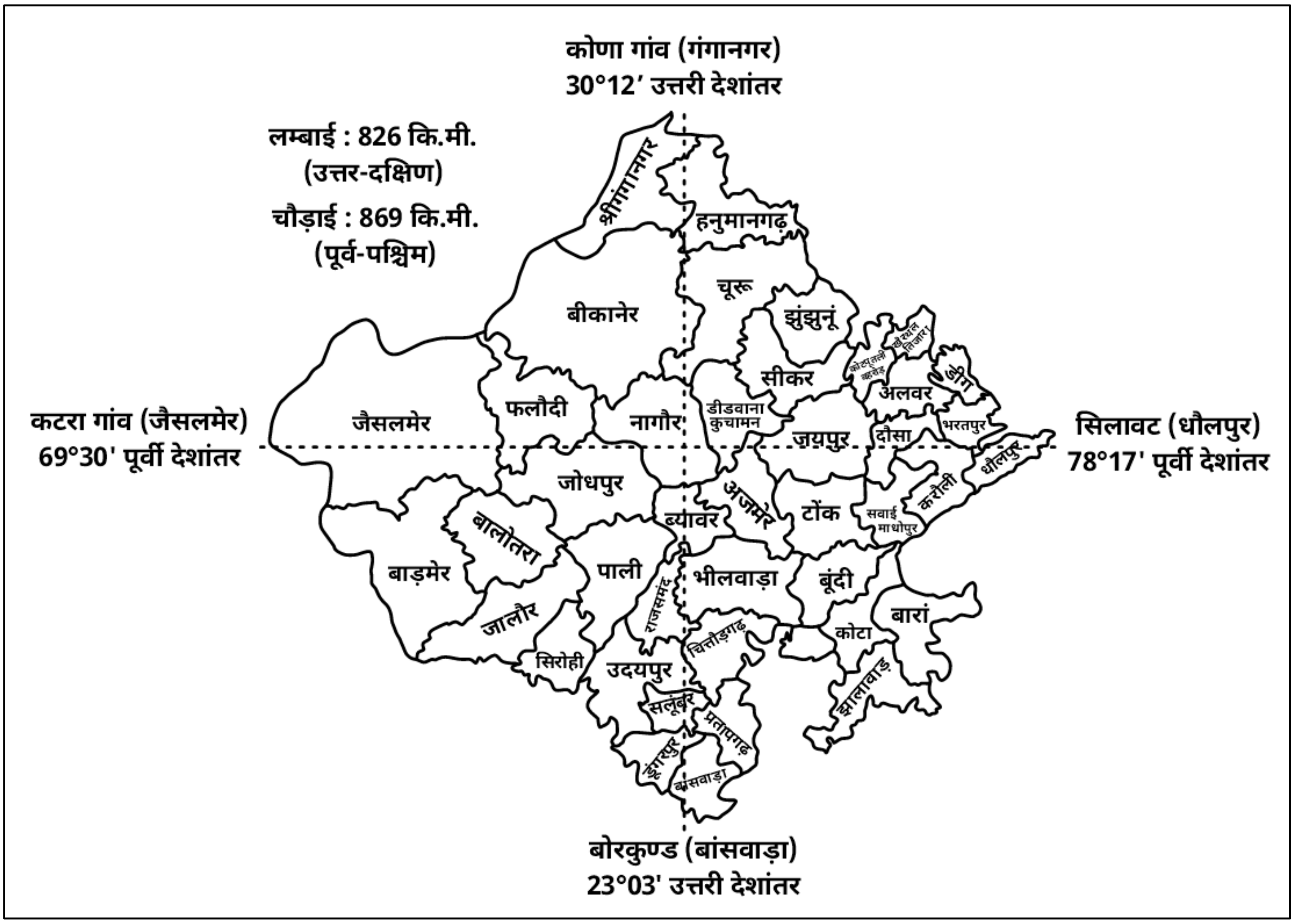

राजस्थान का देशांतरीय विस्तार:-

- राजस्थान का देशान्तरीय विस्तार **69°30′** पूर्वी देशांतर से **78°17′** पूर्वी देशांतर तक है।
- राजस्थान का देशांतरीय विस्तार **8°47′** देशांतरों के मध्य है।
  - 1° **देशांतर** को पार करने में सूर्य का प्रकाश **4 मिनट** का समय लेता है।
  - **1° देशान्तर** - 4 मिनट x देशान्तरीय अंतर
  - 4x8° 47 मिनट या 4x9° = **36 मिनट**
  - अतः राजस्थान का समयान्तर **36 मिनट या 35 मिनट 8 सैकण्ड** है।
- राजस्थान की पूर्व से पश्चिम चौड़ाई **869 किलोमीटर / 539** मील है।
- राजस्थान का पूर्वी बिन्दु **सिलाना गाँव, राजाखेड़ा (तह.) धौलपुर** है।
- राजस्थान का पश्चिमी बिन्दु **कटरा गाँव, सम (तह.) जैसलमेर** है।
- राजस्थान में में सबसे पहले सूर्योदय व सूर्यास्त वाला जिला **धौलपुर** है। सबसे बाद में **जैसलमेर** है।

नोट:- राजस्थान की आकृति विषम **चतुष्कोणीय चतुर्भुजाकार, पतंगाकार व रोहम्बस** के समान है।

- इस आकृति के बारे में सर्वप्रथम '**टी.एच. हेंडले**' ने बताया।

- **राजस्थान की कोणीय दूरी –**

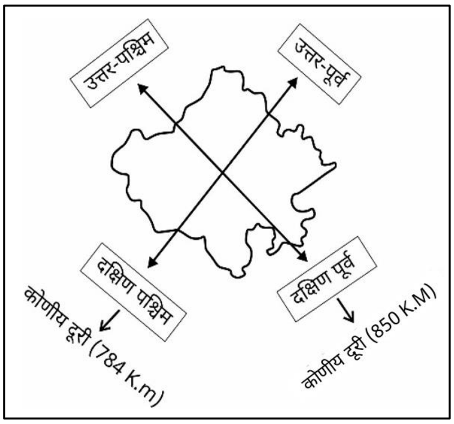

राजस्थान की सीमाएँ

स्थलीय सीमा-

- राजस्थान की कुल स्थलीय सीमा **5,920 किलोमीटर** है, जिसमें से **1,070 किलोमीटर** अन्तर्राष्ट्रीय सीमा तथा **4,850 किलोमीटर** अन्तर्राज्यीय सीमा है।

❖ **अन्तर्राष्ट्रीय सीमा [रेडक्लिफ रेखा]**

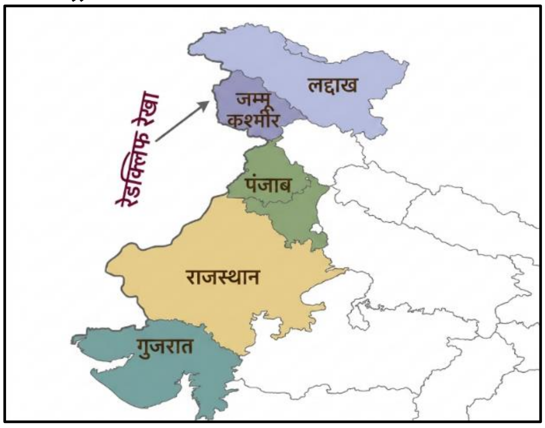

- राजस्थान की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पाकिस्तान के साथ लगती है।
- यह रेखा **भारत और पाकिस्तान** के बीच निर्धारित की गई है।
- रेडक्लिफ का निर्धारण **17 अगस्त, 1947** को **सर सिरिल रेडक्लिफ** ने किया इस कारण इसका नाम '**रेडक्लिफ रेखा**' है।
- रेडक्लिफ रेखा एक **कृत्रिम रेखा** है।
- रेडक्लिफ रेखा पर भारत के **3 राज्य और 2 केन्द्र** शासित प्रदेश स्थित हैं-

  तीन राज्य- पंजाब, राजस्थान एवं गुजरात

  दो केन्द्र शासित प्रदेश- जम्मू-कश्मीर एवं लद्दाख
- रेडक्लिफ लाइन की कुल लम्बाई **3,323 किलोमीटर** है, जिसमें से राजस्थान के साथ **1,070 किलोमीटर** की सीमा लगती है।
- राजस्थान में यह रेखा **हिन्दूमलकोट (श्रीगंगानगर)** जिले से **बाखासर (बाड़मेर)** तक है।
- रेडक्लिफ रेखा राज्य की कुल सीमा का लगभग **18 प्रतिशत** है जबकि इस रेखा की कुल लम्बाई का राजस्थान में **32.2 प्रतिशत** है।

क्र.	जिला	लम्बाई
1.	श्रीगंगानगर	210 किलोमीटर
2.	बीकानेर	168 किलोमीटर
3.	जैसलमेर	464 किलोमीटर
4.	बाड़मेर	228 किलोमीटर
5	फलोदी	30 किलोमीटर (अनुमानित)

- अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित जिलों के अतिरिक्त **सबसे नजदीक जिला-मुख्यालय श्रीगंगानगर तथा सबसे दूर धौलपुर** है।
- **रेडक्लिफ पर पाकिस्तान के 9 जिले स्थित हैं-**

  पंजाब प्रान्त (3 जिले) - बहावलनगर, बहावलपुर, रहीमयार खांन
- **सिंध प्रांत (6 जिले) -** घोटकी, सुक्कुर, खैरपुर, संघर, उमरकोट थारपारकर

राजस्थान की अन्तर्राज्यीय सीमा

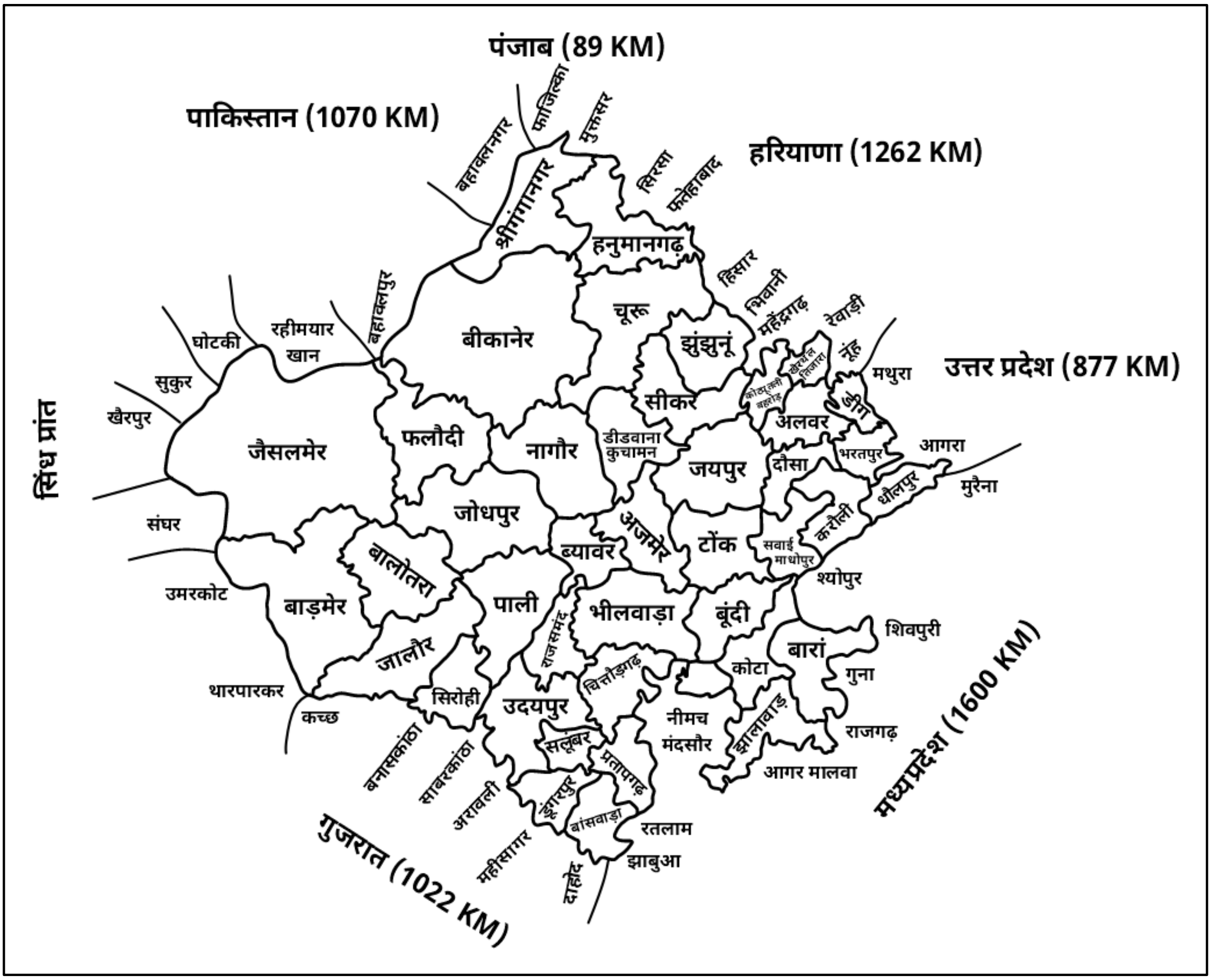

क्र.सं.	दिशा	पड़ोसी राज्य	सीमा की लम्बाई	विभिन्न राज्यों की सीमा से लगने वाले राजस्थान के जिले	राजस्थान की सीमा से लगने वाले अन्य राज्यों के जिले
1.	उत्तर	पंजाब	89 कि.मी. (न्यूनतम सीमा)	1. श्रीगंगानगर (सर्वाधिक) 2. हनुमानगढ़ (न्यूनतम)	**पंजाब के 2 जिले -** फाजिल्का (सर्वाधिक सीमा), मुक्तसर (न्यूनतम सीमा)
2.	उत्तर-पूर्व	हरियाणा	1262 कि.मी.	1. हनुमानगढ़ (सर्वाधिक), 2. चूरू, 3. झुंझुनूं, 4. सीकर, 5. कोटपूतली-बहरोड़, 6. खैरथल तिजारा (भर्तृहरि नगर), 7. अलवर (न्यूनतम), 8. डीग	**हरियाणा के 7 जिले -** सिरसा, फतेहबाद (न्यूनतम सीमा), हिसार, भिवानी, महेन्द्रगढ़ (सर्वाधिक सीमा), रेवाड़ी, नुँह (मेवात)
3.	पूर्व	उत्तरप्रदेश	877 कि.मी.	1. डीग (न्यूनतम), 2. भरतपुर (सर्वाधिक), 3. धौलपुर	**उत्तरप्रदेश के 2 जिले -** मथुरा (न्यूनतम सीमा), आगरा (सर्वाधिक सीमा)
4.	दक्षिण-पूर्व	मध्यप्रदेश	1600 कि.मी. (सर्वाधिक सीमा)	1. धौलपुर, 2. करौली, 3. सवाईमाधोपुर, 4. कोटा, 5. बारां, 6. **झालावाड़ (सर्वाधिक सीमा)** 7. भीलवाड़ा (न्यूनतम), 8. चित्तौड़गढ़, 9. प्रतापगढ़, 10. बांसवाड़ा	**मध्यप्रदेश के 10 जिले -** मुरैना, श्योपुर, शिवपुरी, गुना, राजगढ़, आगरमालवा, नीमच, (सर्वाधिक सीमा), मन्दसौर, रतलाम, झाबुआ (न्यूनतम सीमा)
5.	दक्षिण-पश्चिम	गुजरात	1022 कि.मी.	1. बाँसवाड़ा, 2. डूंगरपुर, 3. उदयपुर (सर्वाधिक), 4. सिरोही, 5. जालौर, 6. बाड़मेर (न्यूनतम सीमा)	**गुजरात के 6 जिले -** दाहोद, महीसागर, अरावली, साबरकांठा, बनासकांठा (सर्वाधिक सीमा), कच्छ (न्यूनतम सीमा)
		कुल राज्य -5	**कुल अन्तर्राज्यीय सीमा 4850 किमी.**	**कुल जिले – 25**	**कुल जिले – 27**

यह भी जानें

- ✦ राजस्थान के अंतर्राज्यीय सीमा वाले जिलों में सर्वाधिक सीमा बनाने वाला जिला - झालावाड़ (520 कि.मी.)
- ◈ राजस्थान के अंतर्राज्यीय सीमा वाले जिलों में न्यूनतम सीमा बनाने वाला जिला - बाड़मेर (14 कि.मी.)
- ◈ राजस्थान के सीमावर्ती जिले - 28 जिले
- ◈ राजस्थान के अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाले जिले - 25 जिले
- ◈ राजस्थान के केवल अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाले जिले - 23 जिले
- ◈ राजस्थान के अन्तर्वती / अन्तःस्थ जिले - 13 जिले
- ◈ नोटः- जिलों से पुनर्गठन से पहले आंतरिक जिलों की संख्या 8 थी जबकि सीमावर्ती जिलों की संख्या 25 थी।
- ◈ कोटा एवं चित्तौड़गढ़ राजस्थान के वे जिले है जो एक ही राज्य के साथ 2 बार सीमा बनाते है।
- ◈ राज्य के सर्वाधिक निकट स्थित बंदरगाह कांडला बंदरगाह (गुजरात) है।

- ◈ **दो-दो राज्यों के साथ सीमा बनाने वाले जिले:-**
  1. हनुमानगढ़ - पंजाब व हरियाणा।
  2. डीग - हरियाणा व उत्तर प्रदेश।
  3. धौलपुर - उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश।
  4. बाँसवाड़ा - मध्य प्रदेश व गुजरात।
- ◈ राजस्थान के 2 जिले अन्तर्राज्यीय व अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित हैं-
  1. श्रीगंगानगर - पाकिस्तान व पंजाब।
  2. बाड़मेर - पाकिस्तान व गुजरात।
- ◈ 7 अगस्त 2023 से पूर्व सर्वाधिक जिले 8 के साथ सीमा बनाने वाला जिला पाली था
- ◈ 7 अगस्त 2023 के बाद राजस्थान का जयपुर, पाली, नागौर जिला सर्वाधिक 7–7 जिलों के साथ सीमा बनाते हैं।
- ◈ राजस्थान में सूर्य की सबसे सीधी किरणें प्राप्त करने वाला जिला **बाँसवाड़ा** है जबकि सबसे **तिरछी किरणें** प्राप्त करने वाला जिला **गंगानगर** है।

कर्क रेखा -

- ◈ 23 $\frac{1}{2}$° उत्तरी अक्षांश, जिसे **कर्क रेखा** भी कहते है, यह राजस्थान के दक्षिणी भाग से निकलती है।
- ◈ यह रेखा चिखली गॉव (डूंगरपुर) को स्पर्श करती हुई बांसवाडा जिले से गुजरती है।
- ◈ राजस्थान का अधिकांश भाग कर्क रेखा के उत्तर में स्थित है।
- ◈ कर्क रेखा की राजस्थान में लम्बाई लगभग 26 किमी है।
- ◈ कर्क रेखा भारत के 8 राज्यों (गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छतीसगढ़, झारखण्ड, पं. बंगाल, त्रिपुरा, मिजोरम) से गुजरती है।
- ◈ कर्क रेखा के सर्वाधिक नजदीक शहर - कुशलगढ़ (बाँसवाड़ा)
- ◈ कर्क रेखा के सर्वाधिक निकट जिला मुख्यालय - बाँसवाड़ा
- ◈ कर्क रेखा से सर्वाधिक दूर शहर/जिला मुख्यालय - गंगानगर
- ◈ सूर्य की किरणों का सर्वाधिक सीधापन - बाँसवाड़ा
- ◈ सूर्य की किरणों का सर्वाधिक तिरछापन - गंगानगर
- ◈ **21 जून (कर्क संक्रांति) –** इस दिन उत्तरी गोलार्द्ध (राजस्थान) का सबसे बड़ा दिन व सबसे छोटी रात होती है।
- ◈ कर्क रेखा पर स्थित क्षेत्रों में 21 जून को दोपहर में परछाई नहीं बनती है, इसलिए इसे **'नो शैडो जोन'** कहते हैं।
- ◈ **21 जून-** अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (2015 से प्रारम्भ)
- ◈ **22 दिसम्बर (मकर संक्रांति) –** इस दिन दक्षिणी गोलार्द्ध का सबसे बड़ा दिन व सबसे छोटी रात होती है।

नोट: इस दिन राजस्थान का सबसे छोटा दिन व सबसे बड़ी रात होती है।

- ◈ 21 मार्च **(बसन्त विषुव)** व 23 सितम्बर को **(शरद विषुव)** की घटना होती है। इस दिन सम्पूर्ण पृथ्वी पर दिन और रात की अवधि समान होती है।
- ◈ **माही नदी** कर्क रेखा को दो बार काटती है।
- ◈ **कांगो नदी** को विषवत रेखा को दो बार काटती है।
- ◈ **लिम्पोपो नदी** को 'घड़ियाल नदी' कहकर भी सम्बोधित किया जाता है। यह नदी मकर रेखा को दो बार काटती है।

नोट:- भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर जाने पर **किरणों का तिरछापन** बढ़ता जाता है व तापमान कम होता जाता है।

- ◈ राजस्थान के कुछ जिले ऐसे हैं जिन्हें हम "अन्तर्वर्ती जिले" (Interior Districts) कहते हैं। ये जिले न तो किसी अन्य राज्य की सीमा से लगते हैं और न ही किसी देश की अंतरराष्ट्रीय सीमा से। (पाली, टोंक, बूंदी, राजसमंद, नागौर, डीडवाना-कुचामन, जयपुर, सलूम्बर, दौसा, बालोतरा, अजमेर, ब्यावर और जोधपुर)

राजस्थान में संभागीय व्यवस्था

- संभागीय व्यवस्था की शुरुआत मनोनीत **मुख्यमंत्री हीरालाल शास्त्री जी ने 1949** में की।
- अप्रैल, 1962 में **मोहनलाल सुखाडिया** सरकार के द्वारा संभागीय व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया।
- 26 जनवरी, 1987 को **हरिदेव जोशी** सरकार के द्वारा संभागीय व्यवस्था की शुरुआत दुबारा की गई तथा 1987 में जयपुर संभाग से अलग होकर नया संभाग **राजस्थान का छठा संभाग अजमेर** को बनाया गया।
- 4 जून, 2005 को **वसुंधरा सरकार** द्वारा **राजस्थान का 7वाँ संभाग भरतपुर** को बनाया गया।
- **गहलोत सरकार का कदम (2022-2023):**
- **नये जिलों की घोषणा -** 17 मार्च, 2023
- **समिति - रामलुभाया समिति**
- **जिलों की संख्या:** राज्य में जिलों की संख्या **33 से बढ़ाकर 50** की गई।
- **संभागों की संख्या:** राज्य में संभागों की संख्या **7 से बढ़ाकर 10** कर दी गई।
- अधिसूचना जारी: इस निर्णय की अधिसूचना 4 अगस्त, 2023 को जारी की गई और यह 7 अगस्त, 2023 से प्रभावी हो गया।
- इस बदलाव से राजस्थान के प्रशासनिक ढांचे में बड़ा बदलाव आया, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में प्रशासनिक सुविधाओं का विस्तार हुआ।
- **भजनलाल सरकार का कदम (2024):**
- **नवगठित जिलों और संभागों की समीक्षा:** 28 जून, 2024 को भजनलाल सरकार ने नवगठित जिलों और संभागों की समीक्षा के लिए जिला रिव्यू कमेटी का गठन किया।
- **कमेटी का गठन:** इस कमेटी की अध्यक्षता **ललित के. पंवार** द्वारा की गई और इसमें वित्त सचिव, ग्रामीण विकास पंचायतीराज, गृह विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव और राजस्व सचिव शामिल थे।
- **मंत्रिमण्डलीय उपसमिति का गठन (2024):**
- **अध्यक्ष:** उपमुख्यमंत्री **प्रेमचंद बैरवा** को उपसमिति का अध्यक्ष बनाया गया। लेकिन, बाद में वे संयोजक पद से इस्तीफा दे गए।
- **संयोजक:** शिक्षा मंत्री **मदन दिलावर** को **18 सितंबर, 2024** को उपसमिति का संयोजक नियुक्त किया गया।
- **अन्य सदस्य: कर्नल राज्यवर्द्धन सिंह राठौड़, कन्हैयालाल चौधरी, हेमन्त मीणा और सुरेश सिंह रावत** को उपसमिति का सदस्य बनाया गया।
- **कैबिनेट की नई घोषणा (2024):**
- **नवगठित संभागों को निरस्त किया:** 28 दिसंबर, 2024 को राजस्थान सरकार की कैबिनेट ने बाँसवाड़ा, सीकर और पाली संभागों को निरस्त कर दिया।
- **नए जिलों को निरस्त किया:** कैबिनेट ने **9 जिलों** को भी निरस्त करने का निर्णय लिया, जिनमें अनूपगढ़, दूदू, गंगापुरसिटी, जयपुर ग्रामीण, जोधपुर ग्रामीण, केकड़ी, नीम का थाना, सांचौर और शाहपुरा शामिल थे।
- **अधिसूचना जारी:** इस निर्णय की अधिसूचना **29 दिसंबर, 2024** को जारी की गई, जिसमें राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 के तहत आवश्यक प्रक्रिया पूरी की गई।
- **नवीन प्रशासनिक ढांचा:** अब वर्तमान में राज्य में **7 संभाग और 41 जिले** है।

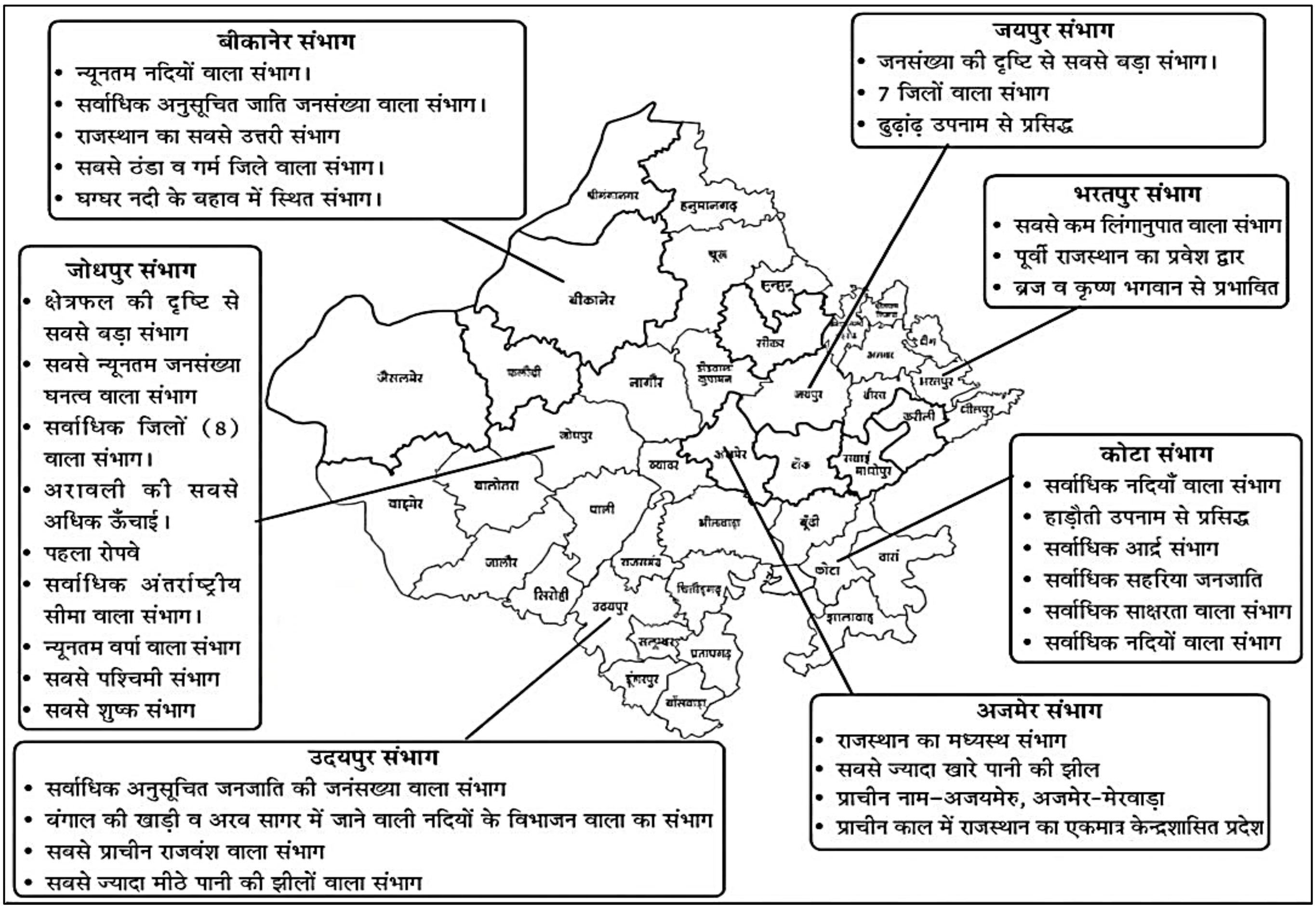

संभागों का पुनर्गठन (29 दिसंबर 2024 को जारी अधिसूचना)

क्र. सं.	संभाग का नाम	जिले संख्या	पुनर्गठन के पश्चात् संभागवार जिलों के नाम	रोचक तथ्य
1	जयपुर	7 जिले	1. जयपुर, 2. सीकर, 3. कोटपूतली-बहरोड़, 4. दौसा, 5. खैरथल-तिजारा, (भर्तृहरी नगर) 6. अलवर, 7. झुंझुनूं	सर्वाधिक जनसंख्या व जन-घनत्व वाला संभाग है। अनुसूचित जाति की जनसंख्या वाला संभाग है।
2	बीकानेर	4 जिले	1. बीकानेर, 2. श्रीगंगानगर, 3. हनुमानगढ़, 4. चूरू	न्यूनतम नदियों वाला संभाग है। राज्य का उत्तरी संभाग है। अनुसूचित जनजाति की न्यूनतम जनसंख्या वाला संभाग है।
3	अजमेर	6 जिले	1. अजमेर, 2. ब्यावर, 3. भीलवाड़ा, 4. टोंक, 5. नागौर, 6. डीडवाना-कुचामन	मध्यवर्ती संभाग है। अधिकतम संभागों के साथ सीमा बनाने वाला संभाग है।
4	भरतपुर	5 जिले	1. भरतपुर, 2. धौलपुर, 3. करौली, 4. डीग, 5. सवाई माधोपुर	राज्य का सबसे छोटा संभाग है। राज्य का सबसे नवीनतम संभाग है। हरियाणा, उत्तरप्रदेश व मध्यप्रदेश के साथ सीमा बनाने वाला संभाग है।
5	कोटा	4 जिले	1. कोटा, 2. बूंदी, 3. बारां, 4. झालावाड़	दक्षिणी पूर्वी संभाग है। सर्वाधिक वर्षा व आद्रता वाला संभाग है। सर्वाधिक नदियों वाला संभाग है। सर्वाधिक साक्षरता वाला संभाग है।
6	जोधपुर	8 जिले	1. जोधपुर, 2. फलौदी, 3. जैसलमेर, 4. बाड़मेर, 5. पाली, 6. सिरोही, 7. बालोतरा, 8. जालोर	क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा संभाग है। सबसे शुष्कतम संभाग है। न्यूनतम वर्षा व उच्च तापमान वाला संभाग है।
7	उदयपुर	7 जिले	1. उदयपुर, 2. चित्तौड़गढ़, 3. प्रतापगढ़, 4. राजसमंद, 5. बांसवाड़ा, 6. डूंगरपुर, 7. सलूम्बर	दक्षिणी संभाग है। सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति वाला संभाग है। दो बार अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाला संभाग है।

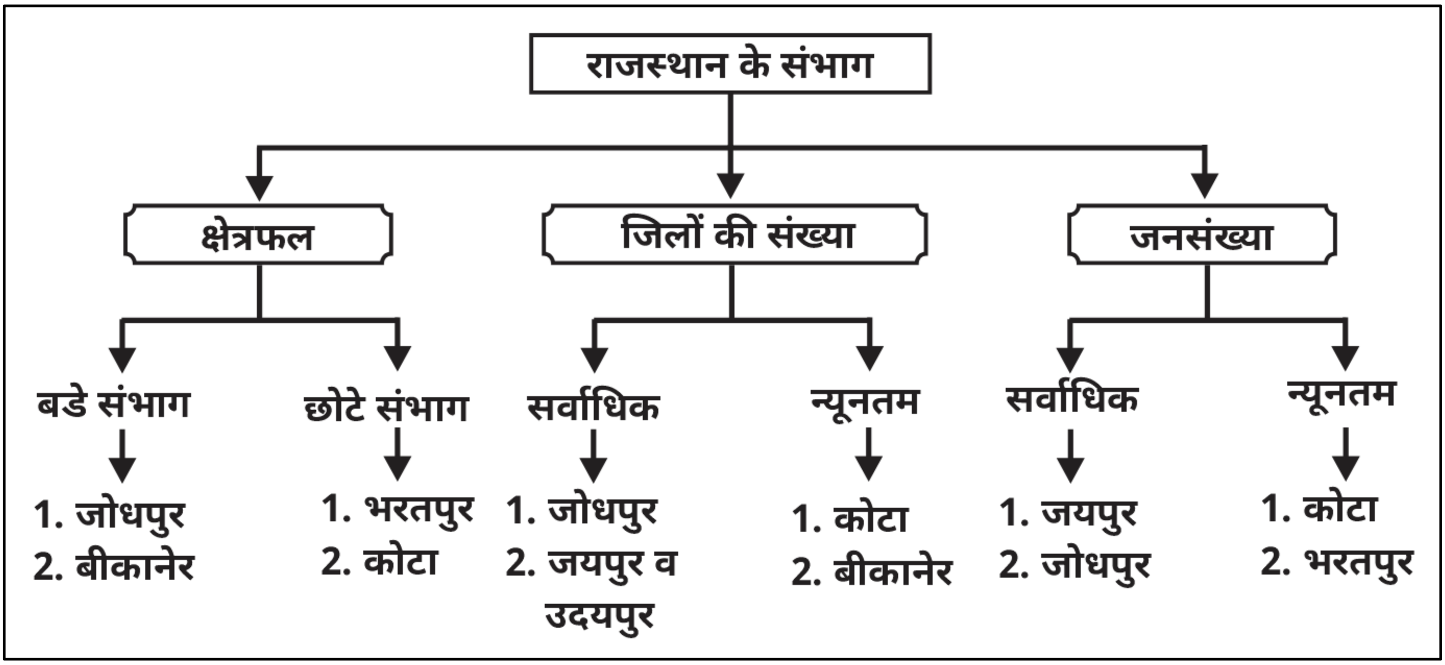

❖ **राजस्थान के जिले -**

◈ वर्तमान में राजस्थान में **41 जिले** हैं।

◈ राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री **भजनलाल शर्मा** ने नये जिलों की घोषणा की है जिससे राजस्थान में जिलों की संख्या 41 हो गयी है।

◈ एकीकरण के समय सबसे अन्त में सम्मिलित होने वाला जिला **अजमेर** था, जिसे **26वें** जिले के रूप में मान्यता मिली।

क्रम	जिला	दिनांक	जिससे अलग हुआ
27वाँ	धौलपुर	15 अप्रैल, 1982	भरतपुर
28वाँ	बाराँ	10 अप्रैल, 1991	कोटा
29वाँ	दौसा	10 अप्रैल, 1991	जयपुर
30वाँ	राजसमन्द	10 अप्रैल, 1991	उदयपुर
31वाँ	हनुमानगढ़	12 जुलाई, 1994	गंगानगर
32वाँ	करौली	19 जुलाई, 1997	सवाई माधोपुर
33वाँ	प्रतापगढ़	26 जनवरी, 2008	बाँसवाड़ा, चित्तौडगढ़ एवं उदयपुर
34वाँ	बालोतरा	07 अगस्त 2023	बाड़मेर
35वाँ	ब्यावर	07 अगस्त 2023	अजमेर, पाली, राजसमन्द, भीलवाड़ा
36वाँ	डीग	07 अगस्त 2023	भरतपुर
37वाँ	डीडवाना, कुचामन	07 अगस्त 2023	नागौर
38वाँ	खैरथल तिजारा	07 अगस्त 2023	अलवर
39वाँ	कोटपूतली-बहरोड	07 अगस्त 2023	जयपुर, अलवर
40वाँ	फलौदी	07 अगस्त 2023	जोधपुर, जैसलमेर
41वाँ	सलूम्बर	07 अगस्त 2023	उदयपुर

राजस्थान के जिलों की आकृतियाँ -

क्र.सं.	जिले	आकृति
1.	चित्तौड़	घोडे की नाल के समान
2.	भीलवाड़ा	लगभग आयताकार
3.	सीकर	प्यालाकार/अर्द्धचंद्राकार
4.	जैसलमेर	अनियमित बहुभुज
5.	बाड़मेर	लगभग भारत जैसा
6.	दौसा	धनुषाकार
7.	टोंक	पतंगाकार/चतुर्भुजाकार
8.	करौली	बतखाकार
9.	राजसमंद	तिलक के समान
10.	सिरोही	बैठे हुए मेंढक के समान

राजस्थान के जिलों के भौगोलिक नाम

भौगोलिक नाम	जिले / भौगोलिक क्षेत्र
कांठल	प्रतापगढ़ के आसपास का क्षेत्र माही नदी के किनारे होने के कारण इसका नाम कांठल पड़ा।
गिरवा	उदयपुर, के आसपास पहाड़ियों से घिरे भाग को गिरवा कहते हैं जिसका सामान्य अर्थ पहाड़ियों की मेखला है।
भौमट	डूँगरपुर, पूर्वी सिरोही व उदयपुर जिलों का आदिवासी क्षेत्र।
शेखावाटी	झुंझुनूँ, चूरू, सीकर, जिलों को शेखावाटी के नाम से जाना जाता है।
ढूँढाड़	आधुनिक जयपुर के पास बहने वाली ढूँढ नदी के समीपवर्ती भाग को ढूँढाड़ कहते थे।
गुर्जर प्रदेश	जोधपुर और पाली का क्षेत्र।
वल्ल / मांड	जैसलमेर का क्षेत्र।
स्वर्णगिरी	जालोर का क्षेत्र।
ऊपरमाल का पठार	मुख्य रूप से भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़) एवं बिजौलिया (भीलवाड़ा) के मध्य पठारी भू–भाग।
देशहरो	जरगा और रागा के बीच पहाड़ी भाग जो वर्ष भर हरा–भरा रहता है, इसलिए इस प्रदेश को देशहरो कहा जाता था।
थली	चूरू, सरदारशहर का क्षेत्र।
छप्पन का मैदान	प्रतापगढ़ एवं बाँसवाड़ा के मध्य भू–भाग को **छप्पन का मैदान** कहा जाता है क्योंकि इस भू–भाग में छप्पन गाँवों अथवा नदी-नालों का समूह है।
मेवल व देवलिया	बाँसवाड़ा और डूँगरपुर के मध्य का भू–भाग है। मेव (डूंगर पहाड़ी) स्थित होने के कारण।
मत्स्य प्रदेश	अलवर, भरतपुर, धौलपुर व करौली जिले का पूर्वी भाग।
यौद्धेय	श्रीगंगानगर के निकट का प्रदेश।
शौरसेन	भरतपुर, करौली, धौलपुर का क्षेत्र।
शिवी	उदयपुर, चित्तौड़गढ़ का क्षेत्र।
वागड़	डूँगरपुर, बाँसवाड़ा का क्षेत्र।
अहिच्छत्रपुर	नागौर के चारों ओर का क्षेत्र।

यह भी जानें	
जिलें	**विशेष तथ्य**
गंगानगर	राजस्थान का अन्नागार / धान का कटौरा
झुँझनूँ	तांबा नगरी
बांसवाडा	सौ द्वीपों का शहर, आदिवासियों का शहर
अलवर	राजस्थान का स्कॉटलैण्ड
जैसलमेर	राजस्थान का अण्डमान, रेगिस्तान का गुलाब
लूणकरणसर	राजस्थान का राजकोट
झालावाड	राजस्थान का नागपुर
बीकानेर	ऊन का घर
बूँदी	राजस्थान की काशी, बावडियों का शहर
माउण्ट आबू	बर्खोयान्सक, राजस्थान का शिमला
मचकुण्ड (धौलपुर)	तीर्थों का भांजा
पुष्कर	तीर्थों का मामा
देवयानी	तीर्थों की नानी
भंडदेवरा (बारां)	राज्य का मिनी खजुराहो
मातृकुंडिया (चित्तौडगढ)	राजस्थान का हरिद्वार
तारागढ (अजमेर)	राजस्थान का जिब्राल्टर
बाटाडू का कुआँ (बालोतरा)	रेगिस्तान का जलमहल
झालरापाटन	घंटियों का शहर
सांचौर (जालौर)	राजस्थान का पंजाब
भिवाड़ी	राजस्थान का नवीन मेनचेस्टर
उदयपुर	झीलों की नगरी, राजस्थान का कश्मीर
अजमेर	राजपूताना की कुंजी, राजस्थान का हृदय, ख्वाजा की नगरी
भीलवाड़ा	वस्त्र नगरी / राजस्थान का मेनचेस्टर
डीग	जलमहलों की नगरी

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए—
1. राजस्थान भारत का क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य है।
2. राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23°3' उ.अ. से 30°12' उ.अ. तक है।
3. कर्क रेखा राजस्थान के मध्य भाग से होकर गुजरती है।
4. राजस्थान का देशांतर विस्तार 69°30' पू.दे. से 78°17' पू.दे. तक है।
सही कथनों का चयन कीजिए—
(a) केवल 1, 2 और 4 (b) केवल 1 और 3
(c) केवल 2 और 3 (d) सभी कथन सही हैं **[a]**

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए—
1. कर्क रेखा राजस्थान के बांसवाड़ा जिले से होकर गुजरती है।
2. राजस्थान का क्षेत्रफल महाराष्ट्र से अधिक है।
3. राजस्थान का देशांतर विस्तार 70° पू.दे. से 80° पू.दे. तक है।
4. राजस्थान का विस्तार 23°3' उ.अ. से 30°12' उ.अ. तक है।
सही उत्तर का चयन कीजिए—
(a) केवल 1 और 4 (b) केवल 1, 2 और 4
(c) केवल 3 और 4 (d) सभी कथन सही **[a]**

3. सूची-I को सूची II से सुमेलित करें:-

सूची-I (देश-राज्य)	**सूची II (राजस्थान की सीमा)**
(A) पाकिस्तान	**(i) दक्षिण**
(B) मध्य प्रदेश	**(ii) पूर्व**
(C) पंजाब	**(iii) उत्तर**
(D) गुजरात	**(iv) उत्तर-पश्चिम**

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:
(a) a-iv, b-iii, c-ii, d-i
(b) a-iv, b-ii, c-iii, d-i
(c) a-iv, b-i, c-ii, d-iii
(d) a-i, b-ii, c-iii, d-iv **[b]**

4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए—
(A) राजस्थान भारत के उत्तर-पश्चिम भाग में स्थित है।
(B) राजस्थान का आकार पतंग/समांतर असमचतुर्भुजाकार माना जाता है।
(C) राजस्थान का आकार त्रिभुजाकार है।
(D) राजस्थान का आकार प्लेट के समान है।
सही उत्तर का चयन कीजिए—
(a) केवल (A) और (B)
(b) केवल (B) और (C)
(c) केवल (A), (B) और (D)
(d) सभी (A), (B), (C), (D) **[a]**

5. 23° उत्तरी अक्षांश तथा 70° पूर्वी देशान्तर रेखाएँ राजस्थान के निम्नलिखित में से क्रमशः किन जिलों से होकर गुजरती हैं?
(a) बाँसवाड़ा व जैसलमेर (b) डूंगरपुर व नागौर
(c) बाँसवाड़ा व डूंगरपुर (d) डूंगरपुर व धौलपुर **[a]**

6. **नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन्हे ध्यानपूर्व पढें:**
कथन (A): राजस्थान का सबसे पश्चिमी बिंदु जैसलमेर का 'कटरा' गांव है।
कारण (R): राजस्थान की अंतर्राष्ट्रीय सीमा (रेडक्लिफ लाइन) केवल जैसलमेर जिले से लगती है।
विकल्प:
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या करता है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
(c) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है। **[c]**

7. **राजस्थान के बारे में कौन-सा कथन सत्य है?**
(a) इसका आधार विषमकोण चतुर्भुज के समान है।
(b) इसका उत्तर से दक्षिण विस्तार 869 किमी. है।
(c) इसकी स्थलीय सीमा 6920 किमी. है।
(d) इसका क्षेत्रफल 3,42329 वर्ग किमी. है। **[a]**

8. **निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिए:–**

सूची-I (राज्य/विशेषता)	सूची-II (क्षेत्रफल / तथ्य)
(A) राजस्थान का कुल क्षेत्रफल	(1) 3,08,245 वर्ग किमी.
(B) मध्य प्रदेश का क्षेत्रफल	(2) विषमकोण चतुर्भुज (Rhombus)
(C) उत्तर प्रदेश का क्षेत्रफल	(3) 3,42,239 वर्ग किमी.
(D) राजस्थान की आकृति	(4) 2,40,928 वर्ग किमी.

कूट -:
(a) A-3, B-1, C-4, D-2
(b) A-1, B-3, C-2, D-4
(c) A-3, B-4, C-1, D-2
(d) A-4, B-1, C-3, D-2 **[a]**

9. **राजस्थान का क्षेत्रफल निम्नलिखित यूरोपीय देशों में से किनके क्षेत्रफल के लगभग बराबर है?**
1. नार्वे **2. बेल्जियम**
3. स्विट्जरलैण्ड **4. पोलैण्ड**
कुटः-
(a) 1, 2, 4 (b) 1, 3
(c) 2, 4 (d) 1, 4 **[d]**

10. **राजस्थान राज्य की स्थिति एवं विस्तार के सम्बन्ध में सही कथन नहीं है?**
(a) राज्य का उत्तर-दक्षिण एवं पूर्व-पश्चिम विस्तार क्रमशः 869 किलोमीटर तथा 826 किलोमीटर है।
(b) राज्य की आकृति विषमकोण चतुर्भुज के समान है।
(c) राज्य की अन्तर्राष्ट्रीय एवं अन्तर्राज्यीय सीमाओं की लम्बाई क्रमशः 1070 किमी. तथा 4850 किमी. है।
(d) राज्य का भौगोलिक क्षेत्र भारत के कुल क्षेत्रफल का 10.41 प्रतिशत के बराबर है। **[a]**

11. **राजस्थान के बारे में निम्नांकित कथनों में से कौन-सा एक सही नहीं है?**
(a) उत्तर-दक्षिण की अपेक्षा पूर्व-पश्चिम विस्तार अधिक है।
(b) उत्तर-दक्षिण की अपेक्षा पूर्व-पश्चिम विस्तार कम है।
(c) इसकी कुल स्थल सीमा 6000 किमी. से कम है।
(d) इसका अक्षांशीय विस्तार 7 अक्षांश से कम नहीं है।

12. **राजस्थान के निम्नलिखित जिलों को दक्षिण से उत्तर के क्रम में बढ़ते हुए अक्षांश के अनुसार व्यवस्थित करें।**
(a) झालावाड़ **(b) झुंझुनूं**
(c) जोधपुर **(d) सवाई माधोपुर**
नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:
(a) (a), (c), (b), (d)
(b) (a), (b), (d), (c)
(c) (d), (c), (b), (a)
(d) (a), (d), (c), (b) **[d]**

13. **राजस्थान के निम्नलिखित शहरों को पश्चिम से पूर्व दिशा में व्यवस्थित करें।**
a. बाड़मेर **b. बून्दी**
c. पाली **d. राजसमंद**
नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनेंः
(a) a, c, d, b (b) c, a, b, d
(c) b, d, a, c (d) d, b, a, c **[a]**

14. **राजस्थान की भौगोलिक स्थिति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**
1. रामदेवरा (जैसलमेर), जिला मुख्यालय से पूर्व दिशा में स्थित है।
2. राजस्थान का सबसे दक्षिणतम जिला राजसमंद है।
3. सोजत और मारवाड़ जंक्शन दोनों पाली जिले के अंतर्गत आते हैं।
4.अक्षांशों के आधार पर झुंझुनूं, जोधपुर से अधिक उत्तर में स्थित है।
उपर्युक्त में से कौन-से कथन सत्य हैं?
(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 1, 3 और 4
(c) केवल 2, 3 और 4 (d) 1, 2, 3 और 4 **[b]**

15. **नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है:**
कथन (A): राजस्थान के श्रीगंगानगर और बाड़मेर जिलों को 'अन्तर्राष्ट्रीय-अन्तर्राज्यीय' जिलों की श्रेणी में रखा जाता है।
कारण (R): ये दोनों जिले पाकिस्तान के साथ अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने के साथ-साथ पड़ोसी भारतीय राज्यों के साथ भी सीमा साझा करते हैं।
कूटः–
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या करता है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
(c) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है। **[a]**

♦♦♦♦

भौतिक प्रदेश -

- एक ऐसा विशिष्ट क्षेत्र जिसका निर्धारण जलवायु, मृदा, उच्चावच के आधार पर किया जाता है। **भौतिक प्रदेश** कहलाता है।
- **अल्फ्रेड वेगनर (जर्मनी) -** इन्होनें वेगनर सिद्धांत (महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत) प्रतिपादित किया।
- इन्होनें सम्पूर्ण स्थलमंडल को **पेंजिया तथा पेंजिया के चारो ओर विस्तृत जलमंडल** को **पैंथालासा** कहा।
- इन्होनें पेंजिया के **उत्तरी भाग को अंगारालैण्ड** जबकि **दक्षिणी भाग को गौडवानालैण्ड** कहा। इन दोनों के मध्य बने विशाल सागर को **टेथिससागर** कहा।

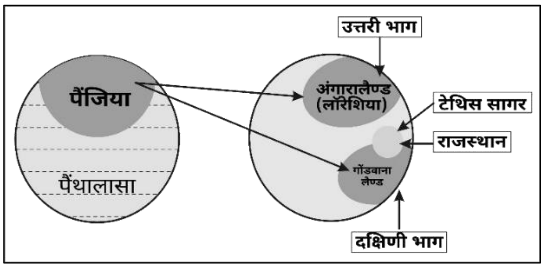

प्रदेश का नाम	अवेशष
पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश	टेथिससागर
अरावली पर्वतीय प्रदेश	गौडवानालैण्ड
पूर्वी मैदानी प्रदेश	टेथिससागर
दक्षिण-पूर्वी पठारी प्रदेश	गौडवानालैण्ड

भौगोलिक वर्गीकरण

- **प्रो. वी.सी. मिश्रा (विनोद चंद मिश्रा) –** इन्होने सर्वप्रथम अपनी पुस्तक '**राजस्थान का भूगोल**' में भौगोलिक वर्गीकरण प्रस्तुत किया।
- इस वर्गीकरण का मुख्य उद्देश्य समान भौतिक, जलवायु, मृदा, कृषि तथा आर्थिक विशेषताओं वाले क्षेत्रों को एक समूह में रखकर उनके क्षेत्रीय अध्ययन को सरल एवं वैज्ञानिक बनाना है।
- प्रो. वी. सी. मिश्रा का 7-क्षेत्रीय भौगोलिक वर्गीकरण राजस्थान के प्राकृतिक, कृषि एवं आर्थिक स्वरूप को समझने का सर्वाधिक प्रचलित आधार माना जाता है
- **प्रोफेसर वी. सी. मिश्रा** ने राजस्थान राज्य को स्थलाकृति, भौगोलिक स्थिति, कृषि और फसल पैटर्न और कुछ आर्थिक विशेषताओं के आधार पर **7 भौगोलिक क्षेत्रों** में विभाजित किया है –

क्र.स.	भौगोलिक प्रदेश	विशेषता	जिले
1.	पश्चिमी शुष्क प्रदेश	शुष्क रेगिस्तानी मैदान (वार्षिक वर्षा 15-25 से.मी.)	जैसलमेर, बाड़मेर, दक्षिण-पूर्वी बीकानेर, पश्चिमी जोधपुर, दक्षिणी-पश्चिमी चूरू तथा पश्चिमी नागौर
2.	अर्द्ध-शुष्क प्रदेश	अरावली के पश्चिम का शुष्क प्रदेश (वार्षिक वर्षा 25-30 से.मी.)	जालौर, पाली, नागौर, सीकर झुंझुनूँ, उत्तर-पूर्वी चूरू व दक्षिण-पूर्वी जोधपुर
3.	नहरी प्रदेश	सिंचित रेगिस्तानी मैदान (वार्षिक वर्षा 15-25 से.मी.)	श्रीगंगानगर, पश्चिमी बीकानेर तथा उत्तरी जैसलमेर
4.	अरावली प्रदेश	अरावली पहाड़ियाँ व श्रृंखलाएँ (वार्षिक वर्षा 30-60 से.मी.)	उदयपुर, दक्षिण-पूर्वी पाली, सिरोही व पश्चिमी डूंगरपुर
5.	पूर्वी कृषि-औद्योगिक प्रदेश	मैदानी व पठारी अर्द्ध शुष्क प्रदेश (वार्षिक वर्षा 5 से.मी. से भी अधिक)	जयपुर, अजमेर, सवाई माधोपुर भीलवाड़ा, बूँदी, अलवर भरतपुर, धौलपुर और कोटा शहर
6.	दक्षिणी पूर्वी कृषि प्रदेश	विन्ध्य व लावा पठार, (वार्षिक वर्षा 50 से.मी. से भी अधिक)	पूर्वी डूंगरपुर, बाँसवाड़ा चित्तौड़गढ़, कोटा और झालावाड़
7.	चम्बल बीहड़ प्रदेश	चम्बल में खनिज प्रदेश, (वार्षिक वर्षा 50 से.मी. से भी अधिक)	सवाई माधोपुर और धौलपुर

- **डॉ. रामलोचन सिंह** ने सन् **1971** में राजस्थान को 2 भागों**, 4** उपभागों और **12 लघु प्रदेशों** में विभाजित किया।

भाग	उपभाग	लघु प्रदेश	
1. राजस्थान	1. मरूस्थलीय	1. बीकानेर मरू प्रदेश	2. जैसलमेर मरू प्रदेश
		3. बाड़मेर मरू प्रदेश	4. घग्घर बेसिन
	2. राजस्थान बागड़	5. शेखावाटी अन्त:प्रवाह क्षेत्र	6. नागौर उच्च भूमि
2. राजस्थान पठार	3. अरावली पठार	7. लूनी बेसिन	8. उत्तरी अरावली
	4. चंबल बेसिन	9. मध्य अरावली	10. दक्षिणी अरावली
		11. मध्य चंबल बेसिन	12. निम्न चंबल बेसिन

- **सन्** 1994 **में डॉ. हरिमोहन सक्सेना ने व प्रो. AK तिवारी** ने **"राजस्थान का प्रादेशिक भूगोल"** नामक पुस्तक में उच्चावच एवं भौगोलिक संरचना के आधार पर राजस्थान को चार भौतिक प्रदेशों में विभाजित किया गया-
  I. पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश (थार का मरुस्थल)
  II. अरावली पर्वतीय प्रदेश
  III. पूर्वी मैदानी प्रदेश
  IV. दक्षिण-पूर्वी पठारी प्रदेश (हाड़ौती का पठार)

राजस्थान को सामान्यतः 4 प्रमुख भौतिक विभागों में एवं 12 उपविभागों में विभाजित किया जाता है।

क्र. सं.	भौतिक प्रदेश	क्षेत्रफल	जनसंख्या	उत्पत्ति	जलवायु	मृदा	वर्षा	युग
1.	प. मरुस्थलीय प्रदेश	61.11%	40%	टेथिस सागर	शुष्क, अर्द्ध शुष्क, विषम	रेतीली, बलुई (एरिडी सॉल्स, एंटी सॉल्स)	20 cm से 50 cm	प्लीस्टोसीन उत्तर
2.	अरावली पर्वतीय प्रदेश	9%	10%	गोण्डवाना लैण्ड	उप आर्द्र	भूरी, लाल, कंकरीली (इनसेप्टी सॉल्स)	50 cm से 90 cm	प्री-केम्ब्रियन
3.	पूर्वी मैदानी प्रदेश	23%	39%	टेथिस सागर	आर्द्र	जलोढ़ दोमट (अल्फी सॉल्स)	50 cm से 80 cm	प्लीस्टोसीन प्रारंभिक
4.	द. पू. पठारी प्रदेश	6.89%	11%	गोण्डवाना लैण्ड	अति आर्द्र	(वर्टी सॉल्स) काली मृदा	80 cm से 120 cm	क्रिटेशियस

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश

❖ **पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश (थार का मरुस्थल) की उत्पत्ति-**

◈ राजस्थान में अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में स्थित विशिष्ट भौगोलिक प्रदेश पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश (थार का मरुस्थल) की उत्पत्ति नूतन महाकल्प (नियोजोइक एरा, चतुर्थक युग) के **प्लीस्टोसीन काल** में टेथिस सागर के अवशेष के रूप में हुई है।

◈ **सर सिरिल फॉक्स तथा बैलेण्ड फोर्ड के अनुसार -** टर्शियरी काल **(साइनोजोइक एरा-तृतीयक महाकल्प)** तक थार का मरुस्थल समुद्र के नीचे था।

यह भी जानें

❖ **थार का मरुस्थल टेथिस सागर के अवशेष के प्रमाण:-**

1. पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में स्थित खारे पानी की झीलें।
2. टर्शियरी कालीन **अवसादी चट्टानों** में जीवाश्म खनिज जैसे - कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस के भण्डार।
3. जैसलमेर के **कुलधरा गाँव** से व्हेल मछली के अवशेष मिले।

◈ चतुर्थक महाकल्प के **प्लीस्टोसीन काल** में समुद्र के निरन्तर पीछे हटने, सूखने, मानवीय क्रियाकलापों जैसे - अतिचारण, निर्वनीकरण, मृदा एवं जल का अनुचित प्रबंधन के कारण मरुस्थलीय दशाओं का विकास हुआ।

❖ **थार के मरुस्थल का विस्तार-**

◈ यह **भारत और पाकिस्तान** के मध्य फैला हुआ है।

◈ थार रेगिस्तान भारत के **हरियाणा, पंजाब, गुजरात और राजस्थान** राज्यों में फैला हुआ है।

◈ भारत में थार मरुस्थल का **सबसे बड़ा विस्तार राजस्थान** में तथा **सबसे छोटा विस्तार हरियाणा** में है।

❖ **राजस्थान के मरुस्थलीय जिले - 16**

जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर, फलौदी, बाड़मेर, बालोतरा, जालौर, नागौर, डीडवाना-कुचामन, पाली, पश्चिमी ब्यावर, गंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू, झुंझुनूं, सीकर

❖ **अरावली के पश्चिम में स्थित जिले - 17**

नोट:- सिरोही अरावली के पश्चिम में स्थित है लेकिन इसे मरुस्थलीय नहीं माना जाता है।

◈ राजस्थान में थार के मरुस्थल का विस्तार राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का **61.11% (2,09,100 वर्ग किलोमीटर)** है जबकि राजस्थान में मुख्य मरुस्थल **1,75,000 वर्ग किलोमीटर** है।

- राजस्थान की **40%** जनसंख्या इस क्षेत्र में निवास करती है।
- **लम्बाई - 640 किलोमीटर**
- **चौडाई - 300-360 किलोमीटर**
  औसत ऊँचाई - 150 मीटर से 300 मीटर
- थार रेगिस्तान की ढलान उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर फैली हुई है।
- **वर्षा – 0-50 सेमी.**
- **मिट्टी – रेतीली बलुई मिट्टी**
- यह **मोटे कणों वाली** मृदा है। इसकी जलग्रहण क्षमता कम होती है।
- **वनस्पति -** मरुद्भिद (जिरोफाइट)
- **प्रमुख वृक्ष -** खेजड़ी, आरणा, बेर, बबूल, फोग, कैर, आक, , रोहिड़ा आदि।
- **वन -** उष्ण कटिबंधीय कटीले वन
- **जलवायु -** शुष्क व अर्द्धशुष्क (अत्याधिक विषम)
- **प्रमुख फसल -** बाजरा, मोठ, ग्वार **(मोटा अनाज)**।
- **प्रमुख चोटी -** डोरा पर्वत (869 मीटर) जालौर
- **प्रमुख अभयारण्य -** राष्ट्रीय मरू उद्यान (जीवाश्म उद्यान)
- **प्रमुख बाँध -** जवाई बांध (पाली)
- इस क्षेत्र का सबसे बड़ा (क्षेत्रफल) जिला **- जैसलमेर**
- थार मरू भूमि का सबसे बड़ा शहर **- जोधपुर**
- इस क्षेत्र की सबसे बड़ी नदी **- लूणी नदी**
- इस क्षेत्र की सबसे बड़ी नहर **- इंदिरा गाँधी नहर**
- थार रेगिस्तान क्षेत्रफल के हिसाब से दुनिया का **17वां** सबसे बड़ा रेगिस्तान है।
- यह विश्व का सबसे नवीनतम मरुस्थल है।
- यह विश्व का सबसे घना मरुस्थल (सर्वाधिक आबादी वाला) है।
- यह विश्व में सर्वाधिक **'जैव विविधता वाला मरुस्थल'** है।
- यह विश्व का **'सर्वाधिक धनी मरुस्थल'** कहा जाता है।
- यह अरावली का **वृष्टिछाया प्रदेश** है।

नोट:- रेगिस्तान का मार्च - रेगिस्तान का आगे बढना ही रेगिस्तान का मार्च कहलाता है।

यह भी जानें
- राजस्थान में थार रेगिस्तान की अक्षांशीय सीमा **25°N** और **30°N** के बीच स्थित है।
- राजस्थान में थार के मरुस्थल का देशान्तरीय विस्तार **$69^0$30'** पूर्वी देशान्तर से **$75^0$45'** पूर्वी देशान्तर के मध्य है।

राजस्थान में मरुस्थल के प्रकार-

1. हम्मादा (चट्टानी/पथरीला मरुस्थल)-
- यह मरुस्थल मुख्यतः चट्टानों और पथरीली सतहों से निर्मित होता है।
- **प्रमुख स्थान-** लोद्रवा, रामगढ़, पोकरण (जैसलमेर), फलोदी और बालोतरा।

2. रैग (मिश्रित मरुस्थल)-
- रैग मरुस्थल का निर्माण चट्टानों और रेत के मिश्रण से होता है।
- यह हम्मादा के आस-पास के क्षेत्रों में पाया जाता है।
- प्रमुख स्थान: जैसलमेर, बाड़मेर और जोधपुर।

3. इर्ग (सम्पूर्ण या महान मरुस्थल)-
- इसे सम्पूर्ण मरुस्थल या महान मरुस्थल भी कहा जाता है।
- इस क्षेत्र में विशाल रेतीले टीले और विस्तृत रेत के मैदान पाए जाते हैं।
- प्रमुख स्थान- जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, नागौर, चूरू, सीकर और झुंझुनूँ।

नोट :- लघु मरुस्थल- गुजरात के कच्छ रन से लेकर बीकानेर के मध्य स्थित मरुस्थल को लघु मरुस्थल की संज्ञा दी गई है।

वर्षा के आधार पर मरूस्थल का वर्गीकरण

शुष्क रेतीला प्रदेश

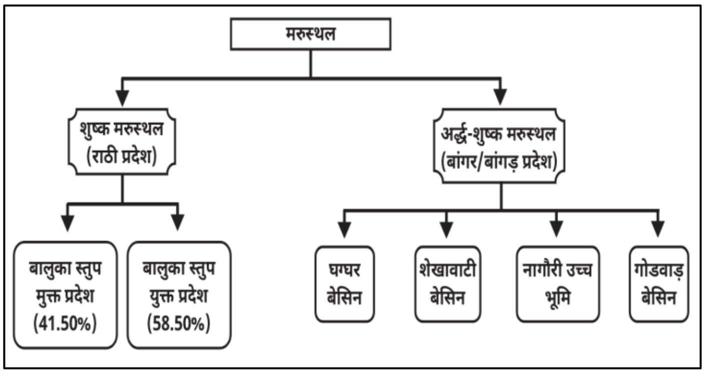

- **25 सेमी. (250 मिमी.)** वर्षा रेखा के पश्चिम में स्थित वे सभी प्रदेश जहाँ 25 सेमी. से कम वर्षा प्राप्त होती है। इस भाग में सम्मिलित है।
- 25 सेमी वर्षा रेखा मरूस्थल को दो भागों में बॉटती है।

(अ) बालुका स्तूप मुक्त प्रदेश-
- **विस्तार-** शुष्क रेतीले प्रदेश का लगभग 41.50% हिस्सा इस श्रेणी में आता है।

विशेषताएँ-
- यहाँ पर बालुका स्तूप (रेतीले टीले) नहीं होते हैं।
- इस क्षेत्र में अधिकतर परतदार (अवसादी) चट्टानें पाई जाती हैं, जो इस क्षेत्र को एक स्थिर और समतल भू-भाग प्रदान करती हैं।
- चट्टानें और शुष्क धरती के कारण यह क्षेत्र कम उर्वर और कम वनस्पति वाला होता है।

प्रमुख स्थान और संरचनाएँ-
- **जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर।**
- यह क्षेत्र बालुका स्तूप मुक्त प्रदेश का प्रमुख हिस्सा हैं, जहाँ पर परतदार चट्टानें और शुष्क भूमि अधिक पाई जाती हैं।

मगरा-
- बालोतरा और पोकरण के बीच स्थित अवशिष्ट पहाड़ियाँ जो शुष्क क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण भू-भाग है।

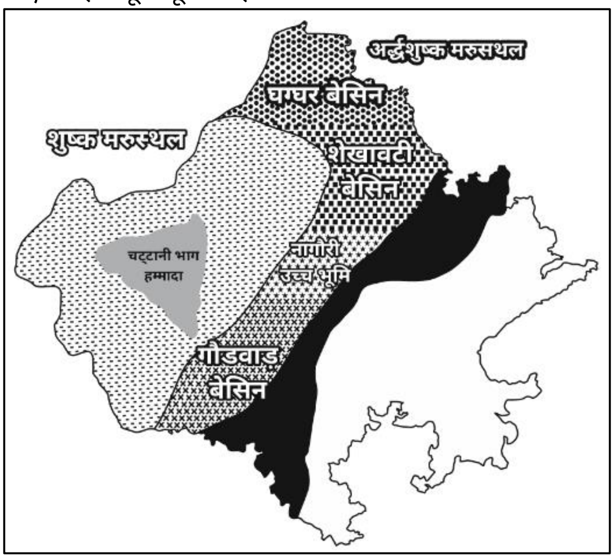

लाठी सीरीज-
- **पोकरन से मोहनगढ़** तक क्षेत्र में फैली एक भू-गर्भीय जल पट्टी है। जैसलमेर में **जूरेसिक युगीन अवसादी चट्टानों** का जमाव है, जो **मीठे जल के पट्टी व स्टील ग्रेड चूना पत्थर** के लिए प्रसिद्ध है।
- लाठी सीरीज में **सेवण घास** पाई जाती है। यह एक प्रोटीन युक्त घास है।

- **सेवण घास** का वैज्ञानिक नाम **लसियुथ्रुस सिडीकुस** है, सेवण घास को स्थानीय भाषा में **लीलोण** कहा जाता है।
- इस घास में **गौडावन पक्षी अण्डे** देता है।

आकल गाँव जीवाश्म पार्क-

- जैसलमेर में राष्ट्रीय मरु उद्यान में आकल गाँव में स्थित **जीवाश्म पार्क** जहाँ पर जुरैसिक कालीन प्राकृतिक वनस्पति के अवशेष मिले हैं-

- **राष्ट्रीय जीवाश्म उद्यान**, जैसलमेर जिले के आकल गाँव के पास स्थित है। यह भारत सरकार द्वारा संरक्षित क्षेत्र है जहाँ लगभग **180 मिलियन वर्ष पुराने जीवाश्म** (मुख्यतः वृक्षों के) संरक्षित हैं।
- यह क्षेत्र पूर्व में टैथिस सागर के अंतर्गत आता था और यहाँ पाए जाने वाले जीवाश्म इस भूवैज्ञानिक इतिहास की पुष्टि करते हैं।
- यह राजस्थान का सबसे बड़ा अभ्यारण्य है।
- आकल वुड फॉसिल पार्क में प्राकृतिक वनस्पति के अवशेषों को संरक्षित किया गया है।
- जैसलमेर के निकट खोजा गया यह जीवाश्म **Jurassic काल** से संबंधित है और इसे **Tharosaurus indicus** नाम दिया गया है।
- इसकी आयु लगभग **167 मिलियन वर्ष (16.7 करोड़ वर्ष)** आंकी गई है, जो इसे **दुनिया का सबसे पुराना शाकाहारी सॉरोपॉड डायनासोर** बनाता है। यह खोज भारत की पुराजैविकी के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

कुलधरा ग्राम-

- बालुका मुक्त प्रदेश में स्थित जैसलमेर का वह गाँव जहाँ से **व्हेल मछली या डायनासोर** के अवशेष मिले हैं।

(ब) बालुका स्तूप युक्त प्रदेश-

- शुष्क रेतीले प्रदेश में स्थित वह क्षेत्र जहाँ बालुका स्तूपों की प्रधानता होती है। थार के मरुस्थल बालू रेत (रेतीली बलुई) मृदा से निर्मित **लहरदार स्थलाकृति बालुका स्तूप** कहलाती है।
- बालुका स्तूपों के मध्य मार्ग को **कारवां (घासी)** कहा जाता है जहाँ से ऊँटों का समूह गुजरता है।
- यह जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, बीकानेर, दक्षिणी श्रीगंगानगर क्षेत्र में पाए जाते हैं। **विशेषता -** इर्ग, बालुका स्तूप, खड़ीन।
- विभिन्न प्रकार के बालुका स्तूप पाये जाते है:-

1. **अनुद्धैर्य बालुका स्तूप** (रेखीय पवनानुवर्ती अनुदिश सीफ) – यह बालूका स्तूप पवनों की दिशा के अनुदिश / समानांतर बनते है। **क्षेत्र -** बालोतरा, बाडमेर, रामगढ (जैसलमेर) आदि।

- दो पवनानुवर्ती बालूका स्तूपों के बीच की निम्न भूमि को **'गासी या कारवां मार्ग'** रेत मुक्त कोरीडोर कहा जाता है। यह तीन प्रकार के होते है:-
  सीप, वनस्पति युक्त रेखीय, पवन विमुख रेखीय

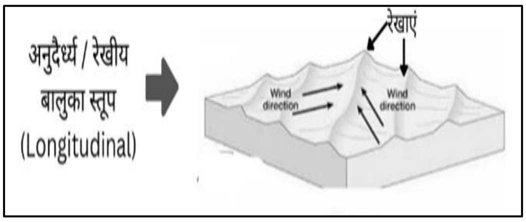

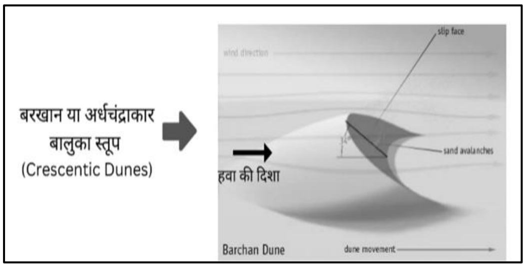

2. **अनुप्रस्थ बालुका स्तूप** (लम्बवत बालुका स्तूप) – यह पवनों की दिशा के समकोण / लम्बवत बनते है।

- यह बालूका स्तूप गतिशील न होकर **स्थायी** होते है।
- यह पुष्कर, पुँगल के आस-पास, बाड़मेर, जोधपुर, रावतसर (हनुमानगढ), चुरू, झुँझनूं आदि जिलों में पाया जाता है।

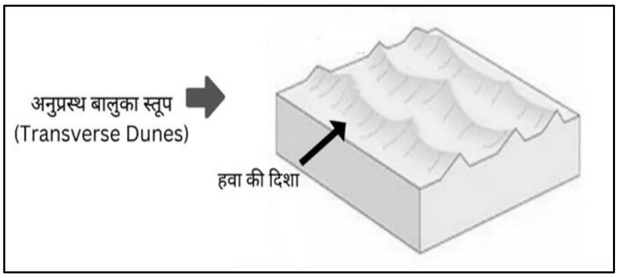

3. **बरखान / बच्छान** – यह बालूका स्तूप अर्द्धचंद्राकार गतिशील होते है। यह वायु की तेज गति के कारण बनते है।

- यह सर्वाधिक नुकसानदायी बालूका स्तूप होते है।
  क्षेत्र - भालेरी (चुरू), देशनोक (बीकानेर), लूणकरणसर (बीकानेर), ओसियां (जोधपुर), नीम का थाना (सीकर) आदि।

4. **तारा बालुका स्तूप** – यह बालूका स्तूप तारे के आकार के होते है। इनकी दिशा हवा में बार-बार बदलती रहती है।

- **क्षेत्र -** मोहनगढ (जैसलमेर), सूरतगढ (गंगानगर)

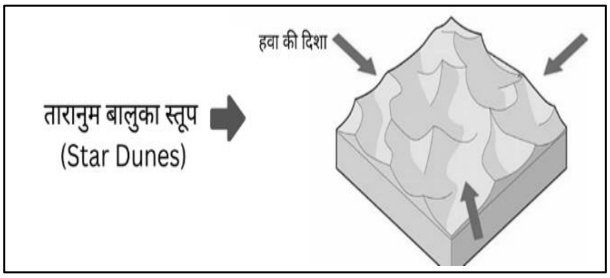

5. **परवलय / पेराबोलिक** – यह बालूका स्तूप राजस्थान में सर्वाधिक पाये जाते है।

- इनकी आकृति महिलाओं के हैयर पिन के समान होती है।
- **क्षेत्र -** सम्पूर्ण शुष्क मरूस्थल

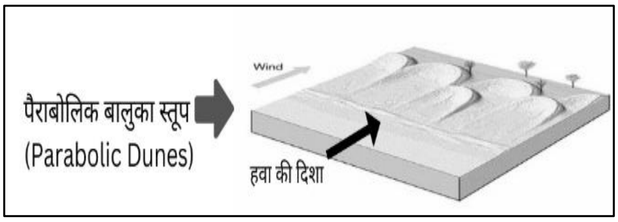

6. **सब्रकाफीज / नेबखा** – यह बालूका स्तूप छोटी झाडियों के सहारे बने होते है।

- **क्षेत्र -** सम्पूर्ण शुष्क मरूस्थल

7. **नेटवर्क बालुका स्तूप -** हरियाणा तक सीमावर्ती क्षेत्रों में पाये जाने वाला बालुका स्तूप।

नोट:- बालुका स्तूप के मध्य में बनी झील **डांड** कहलाती है।

- भारतीय वृहत् मरुस्थल (थार मरुस्थल) राजस्थान के पश्चिमी और उत्तरी-पश्चिमी भाग में फैला है। इसमें **बीकानेर, बाड़मेर और जैसलमेर जैसे शुष्क जिले** शामिल हैं, जो मरुस्थल के प्रमुख हिस्से हैं।

अर्द्ध शुष्क प्रदेश

- पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में स्थित वह भू-भाग जहाँ **25-50 सेमी.** वर्षा होती है।
- **अर्द्ध शुष्क प्रदेश का विस्तार -** शुष्क रेतीला मैदान तथा अरावली पर्वतीय प्रदेश के मध्य पाया जाता है।
- **25 सेमी.** वर्षा रेखा अर्द्ध शुष्क प्रदेश की पश्चिमी सीमा का निर्धारण करती है। **40 सेमी.** वर्षा रेखा अर्द्धशुष्क प्रदेश की पूर्वी सीमा का निर्धारण करती है। उत्तरी सीमा का निर्धारण घग्घर नदी करती है।

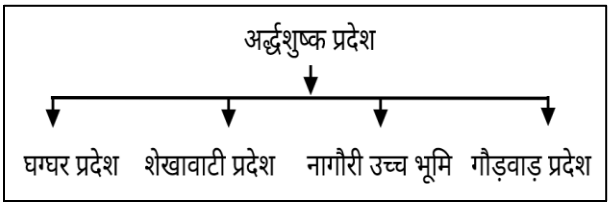

- **इसे 4 भागों में बांटा गया है:-**

1. घग्गर बेसिन :

- **विस्तार –** श्री गंगानगर, हनुमानगढ़
- **पाट –** घग्गर नदी के मैदानी भाग को पाट कहा जाता है।
- **नाली –** घग्गर नदी के प्रवाह क्षेत्र को हनुमानगढ़ में नाली कहा जाता है।
- **काठी / बग्गी –** घग्गर नदी के मैदानी भाग में पाई जाने वाली मृदा काठी/बग्गी कहलाती है।
- **घग्गर दोआब –** घग्गर व सतलज नदी के मध्य पाए जाने वाला मैदानी भाग घग्गर दोआब कहलाता है।
- घग्गर बेसिन में भूरी कछारी मिट्टी का विस्तार है।

2. शेखावाटी क्षेत्र

- विस्तार – सीकर, चुरू, झुंझुनूं, डीडवाना-कुचामन का उत्तरी भाग
- प्रमुख नदी – कान्तली
- यह प्रदेश निम्न एवं मध्यम ऊंचाई के बालुका स्तूपों से युक्त रेतीला मैदान है।
- यहां अधिकांशत: अर्द्धवृत्ताकार बालुका स्तूपों का विस्तार है। जिनमें अनेक लवणीय गर्त (रन) भी यहां है, जैसे डीडवाना-कुचामन, सुजानगढ़, तालछापर, परिहारा आदि।
- यहां जमीन के नीचे चुना पत्थर की परत पाई जाती है।
- वर्षा का जल चुने की परतों में बहता है, इसलिए इसे आंतरिक जलप्रवाह क्षेत्र कहा जाता है।
- **शेखावाटी –** प्राचीन समय में इस क्षेत्र में शेख सामंतों का अधिकार रहा था।
- **तोरावाटी –** शेखावाटी क्षेत्र में कान्तली नदी के प्रवाह क्षेत्र को तोरावाटी कहा जाता है। यहां की पहाड़ियों को तोरावाटी की पहाड़ियां कहा जाता है।
- **बांगर प्रदेश –** नदियों द्वारा जमा की गई पुरानी जलोढ़ मिट्टी का जमाव
- **जोहड़ –** शेखावाटी क्षेत्र में पाए जाने वाले पानी के कच्चे कुओं को जोहड़ कहा जाता है। जोहड़ का निम्न भाग चोभी कहलाता है।
- **जोहड़ विकास कार्यक्रम –** जनक राजेन्द्र सिंह (जोहड़ वाले बाबा, वाटर मैन ऑफ इण्डिया)
- **सर –** शेखावाटी क्षेत्र में मानसून के समय बनने वाले पानी के तालाब सर कहलाते है।
- **बीड –** शेखावाटी क्षेत्र में चारागाह भूमियों को बीड कहा जाता है।

3. नागौरी उच्च भूमि प्रदेश :

- **कूबड़ पट्टी :**
- शेखावटी क्षेत्र तथा लूणी बेसिन के मध्य उच्च उठी हुई भूमि
- विस्तार – नागौर, डीडवाना कुचामन
- औसत ऊंचाई – 300 से 500 मीटर
- इस क्षेत्र में सर्वाधिक खारे पानी की झीले पाई जाती है। (जैसे – सांभर, डीडवाना, कुचामन, नावा, डेगाना)
- **कूबड़पट्टी –** जायल (नागौर) से पुष्कर (अजमेर) के मध्य फ्लोराइड युक्त भूमिगत जल पाया जाता है। जिसे पीने से फ्लोरोसिस नामक रोग हो जाता है।
- लक्षण – दांत का पीला पड़ना, पीठ का झूकना,
- इसे कुबड़ पट्टी या बांका पट्टी/हाँच बेल्ट कहा जाता है।
- नागौरी उच्च भूमि में पाई जाने वाली अवशिष्ट पहाड़ियों को श्रेणी कहा जाता है।
- जैसे- **मांगलोद श्रेणी** – जिप्सम उत्पादन
  मकराना श्रेणी – सफेद संगमरमर उत्पादन (कैल्साइट)
  जायल श्रेणी – फ्लोराइड उत्पादन

4. लूनी बेसिन/गोड़वाड प्रदेश :

- विस्तार – पाली, जोधपुर, जालौर, सिरोही
- यह लूणी व लूणी की सहायक नदियों द्वारा निर्मित्त है। इसे लूणी जवाई बेसिन भी कहा जाता है।
- हिंगलाज का मगरा व नरसिंहपुर पहाड़ लूणी बेसिन में स्थित है।
- लूणी बेसिन की पूर्वी सीमा काला-भूरा डूंगर बनाता है।
- **छप्पन की पहाड़ियां :**
- मौकलसर (बालोतरा) से सिवाणा के मध्य फैली हुई 56 गुबंदाकार पहाड़ियों का समूह
- इसमें ग्रेनाइट पाया जाता है।
- छप्पन की पहाड़ियों में स्थित हल्देश्वर पहाड़ी पर हल्देश्वर महादेव का मंदिर (पीपलूंद, बालोतरा) में बना हुआ है।
- पीपलूंद, बालोतरा को राजस्थान का लघु माउंट आबू व मारवाड़ का माउंट आबू कहा जाता है।
- **नाकोड़ा पर्वत –** बालोतरा – इस पर जैनधर्म का पार्श्वनाथ का मंदिर बना हुआ है। जिसे नाकोड़ा भैरव कहते हैं।
- नाकोड़ा को राजस्थान का मैवा नगर कहा जाता है।
- **मालानी आग्नेय शैल-समूह –** सिवाणा (बालोतरा) से जालौर के मध्य ग्रेनाइट व रायोलाइट युक्त चट्टाने पाई जाती है।
- **जसवंतपुरा की पहाड़ी : (जालौर)**
- यहां से लूणी की सहायक सागी नदी का उद्गम होता है।
- **सर्वोच्च चोटी -** डोरा पर्वत
- यह चोटी पश्चिमी राजस्थान की सबसे ऊँची चोटी (869 मी.) मानी जाती है।
- **सुंडा पर्वत – (जालौर) – ऊंचाई – 991 मीटर**
- इस पर्वत पर सुंधा माता का मंदिर स्थित है। इस पर राजस्थान का प्रथम रोप-वे लगाया गया सन 2006 में ।
- यह क्षेत्र राजस्थान में वर्तमान में भालू सरक्षित क्षेत्र में शामिल है।
- **सेंदड़ा की पहाड़ियां (ब्यावर) –** सर्पाकार चट्टानें

थार के मरुस्थल से संबंधित प्रमुख शब्दावली	
विशेष	**विवरण**
थली	**थार का स्थानीय नाम-** स्थानीय भाषा "(राजस्थानी और सिंधी) में थार के मरुस्थल को **"थली** कहा जाता है। यह नाम इसके भूगोल और सांस्कृतिक महत्त्व को दर्शाता है।
धोरे	**लहरदार स्थलाकृति-** मरुस्थल में पाई जाने वाली रेतीली और बलुई मिट्टी से निर्मित ऊँची"नीची लहरदार आकृतियों को **"धोरे**- कहते हैं। ये क्षेत्रीय विशेषताएँ रेगिस्तान की सक्रियता और उसकी बनावट को प्रदर्शित करती हैं।
लू	**गर्म और शुष्क पवन-** ग्रीष्म ऋतु में मरुस्थल में चलने वाली तेज गर्म हवाओं को **"लू"** कहा जाता है। इन हवाओं की विशेषता यह है कि वे बहुत शुष्क होती हैं और तापमान को तेजी से बढ़ा देती हैं। लू का अनुभव आमतौर पर मई और जून में अधिक होता है।
स्थानीय पवन	**तापमान व वायुदाब के प्रभाव से चलने वाली पवन-** तापमान और वायुदाब में विषमता के कारण किसी स्थान विशेष पर उत्पन्न होने वाली हवाएँ **"स्थानीय पवन"** कहलाती हैं। ये गर्म या ठंडी दोनों प्रकार की हो सकती हैं। **"लू"** और **"मावठ"** स्थानीय पवन के उदाहरण हैं।
भभूल्या	**स्थानीय चक्रवात-** आकस्मिक और सीमित स्थान पर बनने वाले छोटे चक्रवातों को स्थानीय भाषा में **"भभूल्या"** कहते हैं। ये आमतौर पर गर्मियों में दिखाई देते हैं और इनकी तीव्रता मरुस्थल की स्थिति पर निर्भर करती है।
चक्रवात	**वायुदाब और तापमान का प्रभाव-** ग्रीष्म ऋतु में, जब केंद्र में अधिक तापमान और निम्न वायुदाब होता है, तो बाहरी क्षेत्र से केंद्र की ओर तेज गति से पवन बहती है। यह गर्म होकर ऊपर उठती है, जिससे चक्रवात बनता है। थार में यह स्थिति कम तीव्रता वाले चक्रवातों को जन्म देती है।
मावठ	**भूमध्य सागरीय पश्चिमी विक्षोभ-** शीत ऋतु में भूमध्य सागर से आने वाले पश्चिमी विक्षोभों के कारण थार के मरुस्थल में हल्की वर्षा होती है, इसे **"मावठ"** कहा जाता है। मावठ रबी की फसलों, विशेषकर गेहूँ के लिए अत्यंत उपयोगी होती है।
गोल्डन ड्रॉप्स	**मावठ की उपयोगिता-** मावठ की यह वर्षा रबी फसलों के लिए इतनी महत्वपूर्ण है कि इसे **गोल्डन ड्रॉप्स" (सुनहरी बूंदें)"** कहा जाता है।
पुरवईया	**बंगाल की खाड़ी से मानसूनी हवाएँ-** ग्रीष्म ऋतु के दौरान दक्षिण- पश्चिम मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा से आने वाली मानसूनी हवाओं को **"पुरवईया"** कहा जाता है। यह स्थानीय नाम थार के क्षेत्रीय बोली से लिया गया है।
रन/टाट	बालुका स्तूप रहित क्षेत्र में बालू पत्थरों से निर्मित चट्टानों के मध्य छोटे छोटे गड्ढों में वर्षा का जल भर जाता है जो मिट्टी की लवणता से खारा हो जाता है जिन्हे स्थानीय भाषा में रन/टाट कहते हैं। राजस्थान में सर्वाधिक रन जैसलमेर में पाये जाते हैं। प्रमुख रन - कनोड़, बरमसर, भाकरी, पोकरण, लंवा (जैसलमेर), बाप (फलौदी), थोब (बालोतरा), रेडाना रन (बाड़मेर) तालछापर व पड़िहारा रन (चुरू) आदि।
थोब (बाड़मेर)	**सबसे बड़ा रन-** थार के मरुस्थल में **"थोब"** नामक रन क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा है। यह बाड़मेर क्षेत्र में स्थित है।
बॉलसन	**प्लाया से निर्मित मैदान-** प्लाया (मरुस्थलीय झील का तल) के सूखने से जो मैदान बनते हैं, उन्हें **"बॉलसन"** कहा जाता है। यह मरुस्थल के शुष्क और अनियमित जलवायु का सूचक है।
खड़ीन	यह एक जल संग्रहण प्रणाली है, जिसका उपयोग पारंपरिक रूप से वर्षा के पानी को इकट्ठा करने के लिए किया जाता है। खडीन कृषि करने का कार्य **जैसलमेर के पालीवाल ब्राह्मणों** द्वारा किया जाता था।
प्लाया झील	"प्लाया" एक स्पेनिश शब्द है, जिसका अर्थ है "शुष्क क्षेत्र में उच्च भूमि से घिरी निम्न भूमि (बेसिन)"। यहाँ पर वर्षा का जल जमा होकर अस्थायी झील का रूप लेता है। थार के मरुस्थल में बालुका स्तूपों के बीच स्थित ये निम्न भूमि जल संग्रहित करती हैं, जिससे अस्थायी झीलें बनती हैं। राजस्थान में सबसे अधिक प्लाया झीलें **जैसलमेर** क्षेत्र में पाई जाती हैं।
मरहो	तल्ली/पोखर के जल के सूख जाने के बाद उसमें बची उपजाऊ मिट्टी का क्षेत्र 'मरहो' कहलाता है।
तल्ली / पोखर	रेगिस्तानी इलाके में छोटे-छोटे खड्डों में वर्षा का मीठा जल आकर इकट्ठा हो जाता है उन्हें 'तल्ली/पोखर' कहते है।
चंदन नलकूप	जैसलमेर में लाठी सीरीज के पास कम गहराई में ही मीठे पानी का एक नलकूप है, जो 'थार का घड़ा' कहलाता है।
बाप बोल्डर	फलौदी में बाप नामक स्थान पर पुराजीवी महाकल्प के पर्मियन कार्बोनिफेरस काल के हिमानी कृत गोलाश्म (मोरेन चट्टान) के अवशेष मिले हैं, जिसे बाप बोल्डर कहा गया है। इन कंकड़-पत्थरों पर हिमानी घर्षण के निशान मिले हैं।

अरावली पर्वतीय प्रदेश

❖ **अरावली पर्वतीय प्रदेश की उत्पत्ति -**

◈ अरावली का शाब्दिक अर्थ **पर्वतों की शृंखला** है जिसे **विष्णु पुराण में सुमेर पर्वत/मेरु पर्वत/परिपत्र** पर्वत कहा गया है।

◈ अरावली पर्वतीय प्रदेश की उत्पत्ति **65 करोड़ वर्ष** पहले के **प्री-क्रेम्बियन काल** में **गौण्डवाना लैण्ड** में वलन की क्रिया से पर्वतों की एक शृंखला के रूप में निर्माण हुआ जिसे अरावली पर्वतमाला कहा गया।

◈ अरब सागर को अरावली का गर्भ गृह कहा जाता है।

◈ उच्चावच की दृष्टि से अरावली पर्वतमाला भारत के प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेश का भाग है।

◈ अरावली पर्वतमाला से पूर्व **देहली क्रम** भी चट्टानों का विस्तार था जिसे राजस्थान में तीन भागों में विभाजित किया गया -

(i) अलवर समूह - अलवर

(ii) अजबगढ़ समूह - सिरोही

(iii) रायलो समूह - बाड़मेर

❖ **अरावली पर्वतमाला का विस्तार -**

◈ भारत में अरावली का विस्तार **पालनपुर (गुजरात) से रायलसीमा (रायसीना) दिल्ली तक है।**

❖ **अरावली का विस्तार**

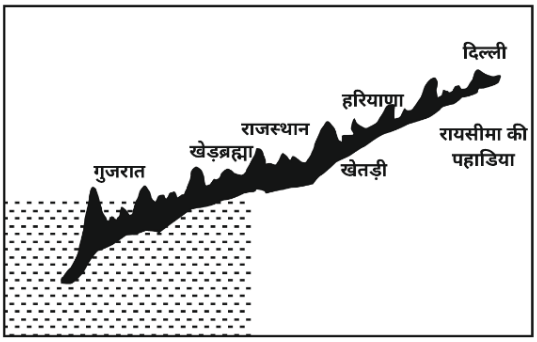

◈ राजस्थान में अरावली पर्वतमाला का विस्तार **खेड़ब्रह्म (सिरोही) से खेतड़ी (झुंझुनूँ)** तक है।
कुल लम्बाई - 692 किलोमीटर
राजस्थान में लम्बाई - 550 किलोमीटर (राजस्थान में अरावली का लगभग 80% भाग स्थित है।)

◈ **राज्य -** गुजरात, राजस्थान तथा हरियाणा

◈ **केन्द्र शासक प्रदेश –** दिल्ली

◈ अरावली पर्वतीय प्रदेश राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 9.3% भाग है तथा इसमें लगभग 10% जनसंख्या निवास करती है।

◈ राजस्थान में अरावली की दिशा दक्षिण पश्चिम **(नैॠत्य कोण)** से उत्तर पूर्व **(ईशान कोण)** की ओर है।

◈ अरावली की औसत ऊँचाई 930 मीटर है।

◈ **अरावली की सर्वाधिक ऊँचाई –** सिरोही

◈ औसत वर्षा - 50 से 90 सेमी

◈ **मिट्टी -** भूरी लाल व कंकरीली मिट्टी

◈ अरावली के दोनों ओर भूरी मिट्टी का प्रसार है।

◈ **मुख्य फसल -** मक्का, ज्वार

◈ अरावली के ढालो पर विशेषतः मक्का की खेती की जाती है।

◈ **वनस्पति-** उष्ण कटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन

◈ **जलवायु -** उपआर्द्र (दक्षिणी अरावली की जलवायु, आर्द्र जलवायु है।)

◈ राजस्थान में अरावली पर्वतमाला का विस्तार **उदयपुर, सिरोही, राजसमंद, सलुम्बर, ब्यावर, पाली, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, डूंगरपुर, अजमेर, डीडवाना-कुचामन का पूर्वी भाग, सीकर, झुंझुनूं, जयपुर, दौसा, कोटपूतली-बहरोड़, खैरथल-तिजारा, अलवर** जिलों में है।

नोट:- उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर अरावली की औसत ऊंचाई एवं चौड़ाई में लगातार वृद्धि होती जाती है।

◈ **अरावली का सर्वाधिक विस्तार वाला भाग दक्षिण -** पश्चिमी भाग

◈ **अरावली का न्यूनतम विस्तार वाला भाग -** मध्य भाग

◈ **अरावली का सर्वाधिक विस्तार वाला जिला -** उदयपुर

◈ **अरावली का न्यूनतम विस्तार और न्यूनतम ऊंचाई -** अजमेर में

◈ उत्तर-पूर्वी में अरावली पर्वत श्रेणी क्रमबद्ध श्रृंखला के रूप में नहीं बल्कि **टूटी-फूटी व कट्टी-फट्टी** है, जिनमें **वायु घाटियां** पायी जाती है।

◈ **अरावली का पूर्वी ढाल अधिक मानसूनी वर्षा** प्राप्त करता हैं इसलिए **पूर्वी ढालो पर वनस्पत्ति अधिक सघन और ऊंचाई तक विद्यमान** है। पूर्वी ढाल अधिक **तीक्ष्ण, ढालयुक्त एवं उच्चत्तर** भी हैं।

◈ रणथम्भौर में **अरावली व विंध्याचल दोनों पर्वतमालाएँ** आपस में मिलती है।

◈ अरावली पर्वतमाला को **भारत की महान जल विभाजक रेखा** कहा जाता है, क्योंकि अरावली के दक्षिण व पश्चिम में प्रवाहित नदियों का जल **अरब सागर** में जाता है तथा अरावली के पूर्व व दक्षिण पूर्व की **नदियों का जल बंगाल की खाड़ी** में जाता है।

◈ अरावली आदिवासी जनजातियों की आश्रय स्थली (सांसी और कथौड़ी को छोड़कर) है।

अरावली के अन्य नाम

◈ अरावली को भौगोलिक भाषा में **मेरू व बूंदी** जिले में **आड़ावली** कहा जाता है।

◈ उदयपुर में अरावली को **आड़ा-वटा** के नाम से जाना जाता है।

◈ अबुल फजल ने अरावली की पहाड़ियों को **'उत्कंट (ऊंट) की गिर गर्दन'** कहकर संबोधित किया था।

◈ **कर्नल जेम्स टॉड** ने मंदिरों की अधिकता होने के कारण आबू पर्वत को **'हिन्दु ओलम्पस'** कहा।

◈ अरावली को **भारत का अपलेशियन** कहा जाता है।

◈ अरावली पर्वतमाला अक्षांशीय विस्तार **23°20'** उत्तरी अक्षांश से **28°20'** उत्तरी अक्षांश के मध्य है।

◈ अरावली पर्वतमाला का देशांतरीय विस्तार **72°10'** पूर्वी देशान्तर से **77°50'** पूर्वी देशान्तर के मध्य है।

◈ **अरावली को 'राजस्थान की जीवन रेखा' कहा जाता है-**

1. मरूस्थल के पूर्व की ओर प्रसार को रोकना

2. अधिकांश नदियों का उद्गम स्थान

3. सर्वाधिक वन विस्तार व वनस्पति और अधिकांश वन्य जीव अभयारण्यों वाला भौतिक भाग है।

4. बंगाल की खाड़ी के मानसून को रोककर पूर्वी एवं दक्षिणी राजस्थान में वर्षा करवाना

5. धारवाड़ कालीन ग्रेनाइट चट्टानों से धात्विक खनिज जैसे - लौहा, तांबा, सोना, चाँदी, सीसा एवं जस्ता आदि निकाले जाते है।

❖ **अरावली पर्वतीय प्रदेश का वर्गीकरण-**

◈ अरावली का सर्वप्रथम वर्गीकरण **ए.एम. हैरॉन** द्वारा किया गया है।

◈ अरावली पर्वतीय प्रदेश को ऊँचाई के आधार पर तीन भागों में विभाजित किया गया है-
(i) उत्तरी अरावली (औसत ऊँचाई 450 मीटर)
(ii) मध्य अरावली (औसत ऊँचाई 700 मीटर)
(iii) दक्षिणी अरावली (औसत ऊँचाई 1000 मीटर)

1. उत्तरी अरावली -

◈ उत्तरी अरावली प्रशासनिक दृष्टि से जयपुर, कोटपुतली-बहरोड़ , खैरथल-तिजारा (भर्तृहरी नगर), अलवर, दौसा ,सीकर, झुंझुनूँ जिलों में विस्तृत है।

◈ उत्तरी अरावली की औसत ऊँचाई **400-450 मीटर** है।

◈ **निर्माण – कवार्टजाइट एवं फाईलाइट**

उत्तरी अरावली की प्रमुख चोटियाँ			
क्र.सं.	चोटी	जिला	ऊँचाई
1.	रघुनाथगढ़	(सीकर)	1,055 मीटर
2.	मालखेत	(सीकर)	1052 मीटर
3.	लोहार्गल	(झुंझुनू)	1051 मीटर
4.	भोजगढ़	(झुंझुनू)	997 मीटर
5.	खोह	(जयपुर)	920 मीटर
6.	हर्ष	(सीकर)	820 मीटर
7.	भैराच	(अलवर)	792 मीटर
8.	बाबाई	(जयपुर)	792 मीटर
9.	बरवाड़ा	(जयपुर)	786 मीटर
10.	बबाई	(झुंझुनूँ)	780 मीटर
11.	बिलाली	(कोटपुतली-बहरोड)	775 मीटर
12.	मनोहरपुरा	(जयपुर)	747 मीटर
13.	बैराठ	(कोटपुतली-बहरोड)	704 मीटर
14.	सरिस्का	(अलवर)	677 मीटर
15.	सिरावास	(अलवर)	651 मीटर
16.	भानगढ़	(अलवर)	649 मीटर
17.	जयगढ़	(जयपुर)	648 मीटर
18.	नाहरगढ़	(जयपुर)	599 मीटर
19.	बालागढ़	(अलवर)	597 मीटर

2. मध्य अरावली-

◈ मध्य अरावली का विस्तार अजमेर और ब्यावर जिलों में विस्तृत है। मध्य अरावली की औसत ऊँचाई **700-750 मीटर** है।

◈ **निर्माण – संगमरमर, ग्रेनाइट व क्वार्टजाइट चट्टानों से**

मध्य अरावली की प्रमुख चोटियाँ			
क्र.सं.	चोटी	जिले	ऊँचाई
1.	गोरमजी	ब्यावर-पाली-राजसमंद	934 मीटर
2.	मरायमजी	टॉडगढ़ (ब्यावर)	933 मीटर
3.	तारागढ़	अजमेर	873 मीटर
4.	नाग पहाड़	अजमेर	795 मीटर

मध्य अरावली के प्रमुख दर्रे			
क्र.सं.	दर्रा / घाट	स्थान	महत्त्व / मार्ग
1.	कच्छवाली दर्रा	ब्यावर	ब्यावर से संबंधित महत्त्वपूर्ण मार्ग
2.	पीपली दर्रा	ब्यावर	राजस्थान का सबसे ऊँचा दर्रा
3.	उदाबारी दर्रा	ब्यावर	ब्यावर में स्थित एक महत्त्वपूर्ण दर्रा
4.	सरूपाघाट	ब्यावर	ब्यावर क्षेत्र में स्थित एक अन्य दर्रा
5.	बर दर्रा	ब्यावर	N.H. 25 से जुड़ा हुआ, अजमेर+ब्यावर (मेरवाड़ा) से मारवाड़ (पाली+जोधपुर) को जोड़ता है।
6.	परवेरिया दर्रा	ब्यावर (पूर्व)	मसूदा मार्ग से जुड़ा हुआ है।
7.	शिसुरा-शिवपुरा घाट	ब्यावर	ब्यावर से विजयनगर की ओर जाने वाला मार्ग।
8.	सूरा घाट	ब्यावर	ब्यावर से भीलवाड़ा जिले को जोड़ता है।
9.	दिवेर की नाल	राजसमंद	कोठारी नदी का उद्गम स्थान
10.	गोरमघाट दर्रा	राजसमंद-पाली	मारवाड़ जंक्शन (पाली) और देवगढ़ (राजसमंद) को रेलमार्ग से जोड़ता है।
11.	कामलीघाट दर्रा	राजसमंद-पाली	यह जोजावर (पाली) और देवगढ़ (राजसमंद) को सड़क मार्ग से जोड़ता है।
12.	बर दर्रा (अपवाद)	बर (पाली)	यह बर (पाली) को ब्यावर से जोडता है।
13.	जीलवा या पगलिया	राजसमंद	मारवाड़ से मेवाड़ को जोडता है।

3. दक्षिणी अरावली-

- दक्षिण अरावली का विस्तार राजसमंद, सिरोही, उदयपुर, सलूम्बर जिलों में हैं।
- दक्षिण अरावली की औसत ऊँचाई 900 मीटर है।
- **निर्माण-** ग्रेनाइट चट्टानों द्वारा।

दक्षिण अरावली की प्रमुख चोटियाँ

क्र.सं.	चोटी	जिला	ऊँचाई
1.	गुरुशिखर	सिरोही	1722 मीटर
2.	सेर	सिरोही	1597 मीटर
3.	देलवाड़ा	सिरोही	1442 मीटर
4.	जरगा	उदयपुर	1431 मीटर
5.	अचलगढ़	सिरोही	1380 मीटर
6.	आबू	सिरोही	1295 मीटर
7.	कुम्भलगढ़	राजसमंद	1224 मीटर
8.	धोनीया डूंगर	उदयपुर	1183 मीटर
9.	जयराज	सिरोही	1090 मीटर
10.	ऋषिकेश	सिरोही	1017 मीटर
11.	कमलनाथ	उदयपुर	1001 मीटर
12.	सुँधा पर्वत	भीनमाल (जालौर)	991 मीटर
13.	माकड़ मगरा	उदयपुर	989 मीटर
14.	सज्जनगढ़	उदयपुर	938 मीटर
15.	सायरा	उदयपुर	900 मीटर
16.	लीलागढ़	उदयपुर	874 मीटर
17.	डोरा पर्वत	जालौर	869 मीटर
18.	नागपानी	उदयपुर	867 मीटर
19.	गोगुन्दा	उदयपुर	840 मीटर
20.	ईसराणा	जालौर	839 मीटर
21.	रोजा भाखर	जालौर	730 मीटर

- राजस्थान में अरावली की सर्वाधिक ऊँची चोटियाँ सिरोही जिले में हैं जबकि राजस्थान में अरावली की सर्वाधिक चोटियाँ उदयपुर जिले में हैं।

दक्षिण अरावली के प्रमुख दर्रे

नाल/दर्रा का नाम	जिला	महत्त्व/मार्ग
फुलवारी की नाल	उदयपुर	कोटड़ा से उदयपुर मार्ग गुजरता है। मानसी वाकल नदियों का उद्गम स्थल, राजस्थान की क्षेत्रफल के हिसाब से सबसे बड़ी नाल।
केवड़ा की नाल	उदयपुर	उदयपुर से जयसमंद झील (सलूम्बर) जाने वाले मार्ग पर स्थित।
देबारी दर्रा	उदयपुर	NH 27 (पुराना नंबर 76) से गुजरता है, चित्तौड़ से उदयपुर की ओर जाने वाले मार्ग पर स्थित।
हाथी दर्रा	उदयपुर	NH 27 से गुजरता है, पिंडवाड़ा (सिरोही) से उदयपुर की ओर जाने वाले मार्ग पर स्थित।
ढ़ेबर दर्रा	सलूम्बर	यहाँ से गोमती नदी निकलती है।
सोमेश्वर की नाल	पाली	पाली से रणकपुर रास्ते पर देसुरी के निकट स्थित।
देसुरी की नाल	पालीराजसमंद-	देसुरी (पाली) से चारभुजा (राजसमंद) जाने वाले मार्ग पर स्थित, NH 162 से गुजरता है।
हाथीगुड़ा की नाल	राजसमंदपाली-	कुम्भलगढ़ किले के पास स्थित, केलवाड़ा (राजसमंद) से घाणेराव (पाली) की ओर जाता है।
बोरांग दर्रा	सिरोही	सिरोही के दक्षिणी भाग में स्थित, आबू क्षेत्र को उदयपुर से जोड़ता है।
हल्दीघाटी दर्रा	राजसमंद	राजसमंद जिले में स्थित।

❖ अरावली के प्रमुख पठार-

- **उड़िया का पठार -** सिरोही में स्थित राजस्थान का सबसे ऊँचा पठार **(1,360 मीटर)।**
- **भोराठ का पठार-** गोगुन्दा से कुम्भलगढ़ के मध्य स्थित **1,225 मीटर** उच्च पठारी क्षेत्र। **(राजस्थान का दूसरा सबसे ऊँचा)**
- **महत्त्व/मार्ग** - सिरोही में उड़िया के पठार के दक्षिण में स्थित पठार है।
- **मेसा का पठार-** चित्तौड़गढ़ में बेड़च तथा गम्भीरी नदियों द्वारा अपरदित पठार (620 मीटर)।
- **मानदेसरा का पठार-** चित्तौड़गढ़।
- **लसाड़िया का पठार-** सलूम्बर जयसमंद झील के पूर्व में स्थित **उबड़-खाबड़** पठारी क्षेत्र **(राजस्थान का सबसे कटा-फटा पठार** है।)
- **देशहरो का पठार-** उदयपुर में **जरगा तथा रागा** की पहाड़ियों के मध्य स्थित वर्ष भर हरा-भरा रहने वाला पठारी क्षेत्र।
- **ऊपरमाल का पठार-** बिजौलिया से भैंसरोड़गढ़ के मध्य स्थित पठार क्षेत्र।
- **भोमट का पठार-** उदयपुर, डूँगरपुर।
- **कॉंकनवाड़ी का पठार-** अलवर।

❖ अरावली के प्रमुख पर्वत एवं पहाड़ियाँ-

- **गिरवा-** उदयपुर के आस-पास पाई जाने वाली **अर्द्धचंद्राकार या तश्तरीनुमा** पहाड़ियों को स्थानीय भाषा में **गिरवा** कहा जाता है।
- **भाकर-** पूर्वी सिरोही में स्थित **तीव्र ढाल वाली पहाड़ियाँ भाकर** कहलाती है।
- **मेवल-** डूँगरपुर, बाँसवाड़ा के मध्य स्थित पहाड़ियों को स्थानीय भाषा में **मेवल** कहा जाता है।
- **मगरा-** उदयपुर के उत्तर पश्चिम में स्थित अवशिष्ट पहाड़ियाँ **मगरा** कहलाती है। **जैसे -** माकड़ का मगरा, बांकी का मगरा, कामन मगरा, लेगा मगरा आदि।

जिला	पहाड़ियां/पर्वत	विशेषताएँ
सीकर	खंडेला की पहाड़ी	कान्तली नदी का उद्गम एवं युरेनियम का भण्डारण
सीकर	मालखेत की पहाड़ी	
सीकर	काजल हिल्स व हर्ष पर्वत	हर्ष पर्वत जीण माता का मंदिर बना हुआ है।
अलवर	हर्षनाथ की पहाड़ी	
अलवर	उदयनाथ की पहाड़ी	रूपारेल नदी का उद्गम
जोधपुर	चिडीयाटुंक की पहाड़ी	मेहरानगढ़ का किला
राजसमन्द	खमनौर की पहाड़ियाँ	बनास नदी का उद्गम
राजसमंद	बिजराल ग्राम की पहाड़ी	खारी नदी का उद्गम स्थल
राजसमंद	दिवेर की पहाड़ियाँ	कोठारी नदी का उद्गम स्थल
राजसमन्द	रेल का मगरा	
राजसमंद	नील हिमवंत/हेमकुट/गंधमादन पर्वत	कुंभलगढ़ दुर्ग बना हुआ है।
बांसवाड़ा	कालिंजरा की पहाड़ी	चाप नदी का उद्गम स्थल
बांसवाड़ा	मानगढ़ पहाड़ी	मानगढ़ धाम स्थित है
सिरोही	बेल का मगरा	वोलेस्टोनाइट का उत्पादन
उदयपुर	गिरवा/तस्तरिनुमा पहाड़ी	इसके मध्य उदयपुर नगर बसा हुआ है।
उदयपुर	माछला मगरा	
उदयपुर	जरगा व रागा पहाड़ी	जरगा व राजा के मध्य हरे भरे पहाड़ी भाग को देशहरो कहा जाता है
उदयपुर	गोगुन्दा पहाड़ी	आयड़ नदी का उद्गम स्थल
उदयपुर	मोती मगरी	महाराणा प्रताप का स्मारक
उदयपुर	हिरन मगरी	
उदयपुर	बिछामेडा की पहाड़ी	सोम नदी का उद्गम स्थल
जयपुर	इगल हिल्स (चील पहाड़ी)	जयगढ़ किला स्थित है
जयपुर	मोती डूंगरी व झालाना डूंगरी	
जयपुर	सेबर पहाड़ी	साबी नदी का उद्गम
जयपुर	मनोहरपुरा की पहाड़ी	मेंथा नदी का उद्गम स्थल
जैसलमेर	त्रिकुट पहाड़ी	सोनारगढ़ का किला
सवाई माधोपुर	चौथ का बरवाडा	सीसा–जस्ता उत्पादन
पाली	काला भूरा डूंगर	लूणी नदी की पूर्वी सीमा पर
पाली	नानी की पहाड़ी	सोजत का किला व मीठड़ी नदी का उद्गम
पाली	सारण की पहाड़ी	रावचंद्र सेन की छतरी
कोटपुतली बहरोड़	गणेश डूंगरी	
कोटपुतली बहरोड़	भीम डूंगरी	
कोटपुतली बहरोड़	बीजक की पहाड़ी	
कोटपुतली बहरोड़	बैराठ हिल्स	बाणगंगा नदी का उद्गम
दौसा	देवगिरी की पहाड़ी	दौसा का किला
प्रतापगढ़	भंवर माता की पहाड़ियां	जाखम नदी का उद्गम स्थल
भीलवाड़ा	बीजासन की पहाड़ी	मांडलगढ़ का किला
भीलवाड़ा	तिरंगा पर्वत	लौह अयस्क का उत्पादन
झुंझुनूं	मोड़ा पहाड़	
चूरू	स्यानण की डूंगरी	
भरतपुर	नैना की पहाड़ी, छटंकी की पहाड़ी, मंडहोली की पहाड़ी	

मगरा क्षेत्र विकास कार्यक्रम

- यह कार्यक्रम वर्ष 2005-06 में प्रारम्भ किया गया। यह राजस्थान के 5 जिलों के 16 विकास खण्डों में संचालित है। यह कार्यक्रम राजस्थान के दक्षिणी मध्य भाग जो कि पहाड़ी क्षेत्रों से घिरा हुआ है। मुख्यतया भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, ब्यावर, पाली व राजसमंद, जो जनजाति क्षेत्र के अंतर्गत नहीं आता है, मगरा क्षेत्र के नाम से जाना जाता है।

पूर्वी मैदानी प्रदेश

❖ **उत्पत्ति -**

◈ पूर्वी मैदानी प्रदेश की उत्पत्ति **नूतन महाकल्प (नियोजोइक एरा)** के प्लीस्टोसीन काल में गंगा तथा यमुना द्वारा लाई गई **मृदा/जलोढ़कों के निक्षेप/जमाव** से हुई।

◈ वर्तमान में माना जाता है कि राजस्थान के पूर्वी मैदानी क्षेत्र का प्रमुख निर्माण **बनास, चम्बल, बाणगंगा** और इनकी सहायक नदियों द्वारा हुआ है। जो विशेष रूप से उपजाऊ और कृषि के लिए उपयुक्त है।

❖ **विस्तार-**

◈ पूर्वी मैदानी प्रदेश राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का **23% (23.3%)** है।

◈ पूर्वी मैदानी प्रदेश में राजस्थान की कुल जनसंख्या का **39%** निवास करता है।

◈ पूर्वी मैदानी प्रदेश का राजस्थान में विस्तार मुख्यत: अरावली पर्वतमाला के पूर्व में है।

◈ पूर्वी मैदानी प्रदेश का ढाल पश्चिम से पूर्व है।

❖ **क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताएँ-**

◈ **आयतन और स्थिति-** राजस्थान का यह मैदानी क्षेत्र नदियों द्वारा पोषित होता है और गंगा के मैदान का एक हिस्सा है।

◈ **जलवायु -** आर्द्र जलवायु

◈ यहाँ की जलवायु सामान्यत: गर्म और शुष्क होती है, लेकिन वर्षा औसतन **50 से 80 सेमी.** के बीच होती है।

◈ **औसत ऊँचाई-** क्षेत्र की औसत ऊँचाई **200 से 500 मीटर** के बीच है।

◈ **मिट्टी -** जलोढ़ व दोमट (कांप/कछारी)

◈ **मुख्य जिले-** यह क्षेत्र विभिन्न जिलों में फैला हुआ है, जिनमें प्रमुख हैं

◈ अलवर, कोटपूतली-बहरोड़, खैरथल-तिजारा (भर्तृहरि नगर) डीग, भरतपुर, जयपुर, दौसा, धौलपुर, करौली, सवाईमाधोपुर, भीलवाड़ा, सलूम्बर, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा आदि।

❖ **सिंचाई और कृषि-**

◈ इस क्षेत्र में सिंचाई का प्रमुख साधन नहरें हैं, जिनमें प्रमुख नहरें हैं- **भरतपुर नहर**, **गुड़गाँव नहर**।

◈ यह राजस्थान का सर्वाधिक कृषि विकास वाला भाग है।

◈ कृषि यहाँ की मुख्य गतिविधि है और यहाँ की उपजाऊ मिट्टी में गेहूं, चावल, मक्का, जौ और विभिन्न फल और सब्जियाँ उगाई जाती हैं।

◈ यह राजस्थान का सर्वाधिक उपजाऊ भौतिक भाग है, इसलिए इसे **'खाद्यान्न का कटोरा'** भी कहा जाता है।

◈ यह राजस्थान का सर्वाधिक औद्योगिक विकास वाला भाग है।

❖ **पूर्वी मैदानी प्रदेश को निम्न भागों में विभाजित किया जाता है:-**

1. चम्बल बेसिन
2. बनास-बाणगंगा बेसिन
3. छप्पन बेसिन / माही बेसिन

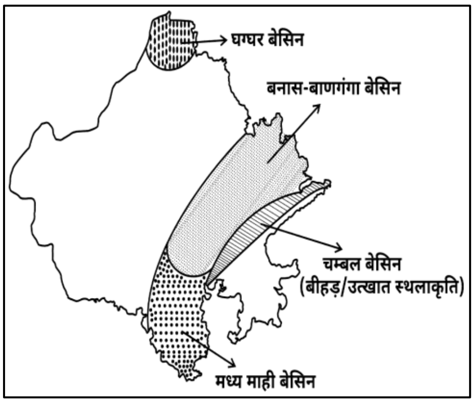

(i) चम्बल बेसिन -

◈ यह चम्बल नदी एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित मैदानी भाग है।

◈ चम्बल बेसिन **उत्खात स्थलाकृति** हेतु पूरे भारत में विख्यात है।

◈ चम्बल बेसिन में **काली जलोढ़ मिट्टी** पायी जाती है।

◈ **डांग/उत्खात स्थलाकृति (Bad land Topography)**
चम्बल नदी अपने अपवाह क्षेत्र में **ऊँची-नीची** कृषि के अयोग्य भूमि को **उत्खात स्थलाकृतियों** का निर्माण करती हैं, इसे स्थानीय भाषा में **डांग** कहते हैं।

◈ सर्वाधिक डांग भूमि **करौली** में है। इसलिए करौली को **'डांग की रानी'** कहा जाता है।

◈ **बीहड़ -** चम्बल के प्रवाह के कारण मिट्टी में **अवनालिका अपदरन** द्वारा अत्यधिक कटाव से गहरी घाटियाँ बन गई हैं, जो **'बीहड़'** कहलाती है।

◈ बीहड़ **डाकुओं की शरणस्थली** कहलाते हैं। राजस्थान के **कोटा, सवाईमाधोपुर, बूंदी, धौलपुर** जिले बीहड़ प्रभावित है।

(ii) बनास-बाणगंगा बेसिन-

◈ यह मैदान बनास नदी व उसकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित है। यह मैदानी क्षेत्र कहीं पूर्ण समतल है तो कहीं कटा-फटा, किन्तु सम्पूर्ण क्षेत्र में भूरी तथा जलोढ़ मृदा का जमाव है जो कृषि के लिए उपयुक्त है।

◈ **बनास बेसिन को चार प्रमुख मैदानी क्षेत्रों में विभाजित किया गया है:-**

1. **मेवाड़ का मैदान** - बनास बेसिन का दक्षिणी भाग **'मेवाड़ का मैदान'** के नाम से जाना जाता है। जो मुख्यतः **भीलवाड़ा व चितौडगढ़** में विस्तृत है।

2. **मालपुरा-करौली का मैदान -** यह क्षेत्र मालपुरा (टोंक) से करौली के मध्य स्थित है।

◈ मालपुरा करौली का मैदान बनास बेसिन का उत्तरी पूर्वी भाग है। जो टोंक, सवाईमाधोपुर व करौली जिलों में विस्तृत है।

◈ इस क्षेत्र को **ए. एम. हेरॉन ने 'तृतीय पेनिप्लेन'** नाम दिया है।

◈ यह **कांपीय मिट्टी, नीस व शिष्ट चट्टानों** से निर्मित है। यहाँ के **बलुई पत्थरों** का विदेशों में भी निर्यात होता है।

◈ इसकी औसत ऊँचाई **280 से 400 मीटर** है। इस मैदान का ढ़ाल दक्षिण-पूर्व और पूर्व की ओर है।

3. **खैराड़ प्रदेश-** यह क्षेत्र जहाजपुर (भीलवाड़ा) से टोंक के बीच स्थित है और यहां बनास नदी द्वारा निर्मित मैदान पाया जाता है।

4. **पीडमॉन्ट -** यह देवगढ़ (राजसमंद) से भीलवाड़ा के बीच स्थित है, जहां बनास नदी के सहारे अवशिष्ट पहाड़ी क्षेत्र **(Pediment)** पाया जाता है।

❖ **बाणगंगा बेसिन -**

◈ यह **बाणगंगा नदी** के बहाव क्षेत्र का मैदान है।

◈ **जिले -** कोटपुतली-बहरोड, जयपुर, दौसा, डीग, भरतपुर।

◈ यह पूर्वी मैदानी प्रदेश का सर्वाधिक उपजाऊ भाग है।

◈ इसे **रोही का मैदान** के नाम से भी जाना जाता है।

◈ **रोही का मैदान** - जयपुर से भरतपुर के मध्य बाण गंगा तथा यमुना नदियों के मध्य स्थित मैदानी प्रदेश, जिसे रोही दोआब प्रदेश के नाम से जाना जाता है।

(iii) माही बेसिन -

◈ यह बेसिन माही व उसकी सहायक नदी द्वारा बनाया गया है।

◈ यह राजस्थान के दक्षिणी भाग में माही नदी के आस-पास स्थित क्षेत्र है, जिसे **माही बेसिन** कहा जाता है।

❖ **इसे तीन प्रमुख मैदानी प्रदेशों में विभाजित किया गया है-**

1. **छप्पन का मैदान-** यह क्षेत्र प्रतापगढ़ से बाँसवाड़ा के मध्य स्थित है, जहां माही नदी के किनारे **56** गाँवों का समूह और नदी नालों का मिलाजुला रूप पाया जाता है।
2. **कांठल का मैदान-** यह क्षेत्र प्रतापगढ़ में स्थित है और माही नदी के तटवर्ती मैदान के रूप में पहचाना जाता है।
3. **वागड़ प्रदेश-** यह क्षेत्र डूंगरपुर और बाँसवाड़ा के मध्य स्थित है, जहाँ माही नदी द्वारा निर्मित विखंडित पहाड़ी क्षेत्र पाई जाती है।

◈ माही बेसिन को प्राचीन काल में **पुष्प प्रदेश** के नाम से भी जाना जाता था।

दक्षिण-पूर्वी पठारी प्रदेश

◈ **दक्षिण-पूर्वी पठारी प्रदेश** (**हाड़ौती का पठार**) की उत्पत्ति मध्यजीवी महाकल्प **(मिसोजोइक एरा) के क्रिटेशियस काल** में गौंडवाना लैण्ड में ज्वालामुखी क्रिया के दरारी उद्गार से निकले लावा के जमाव से हुई है।

◈ हाड़ौती का पठार प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेश के मालवा के पठार का उत्तरी भाग है, जिसका विस्तार राजस्थान के दक्षिण-पूर्व में है, इस कारण इसे दक्षिणी-पूर्वी पठारी प्रदेश कहा जाता है।

◈ **मुख्य विस्तार -** कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़, रावतभाटा (चित्तौड़गढ़), भीलवाड़ा (बिजोलिया) और पूर्वी बाँसवाड़ा।

◈ **कुल क्षेत्र-** राजस्थान के **क्षेत्रफल का 6.89%**

◈ **जनसंख्या 11%**

❖ **पठार का स्वरूप-**

◈ औसत ऊँचाई - 500 मीटर।

◈ पठार के ढाल - दक्षिण से उत्तर-पूर्व।

◈ उच्चतम चोटी - चांदखेड़ी (झालावाड़), 517 मीटर।

❖ **मिट्टी-**

◈ **काली, कपासी (रेगुर)-** लावा से निर्मित उपजाऊ मिट्टी।

◈ कृषि योग्य भूमि होने के कारण यह फसल उत्पादन में समृद्ध है।

❖ **प्राकृतिक संसाधन-**

◈ प्रमुख नदियाँ- **चंबल, कालीसिंध, परवन, पार्वती।**

◈ यह राजस्थान का **सर्वाधिक नदियों वाला भौतिक भाग** है।

❖ **जलवायु और वर्षा-**

◈ औसत वर्षा- **80–120 सेमी.।**

◈ जलवायु- **अति आर्द्र।**

◈ यह राजस्थान का **सर्वाधिक वर्षा वाला प्रदेश** है।

❖ **कृषि और प्रमुख फसलें-**

◈ मुख्य फसलें- **अफीम, सोयाबीन, कपास।**

❖ **उच्चावच के आधार पर हाड़ौती को दो भागों में विभाजित किया गया है–**

A. विन्ध्यन कगार क्षेत्र
B. दक्कन का पठार (दक्षिण का पठार)

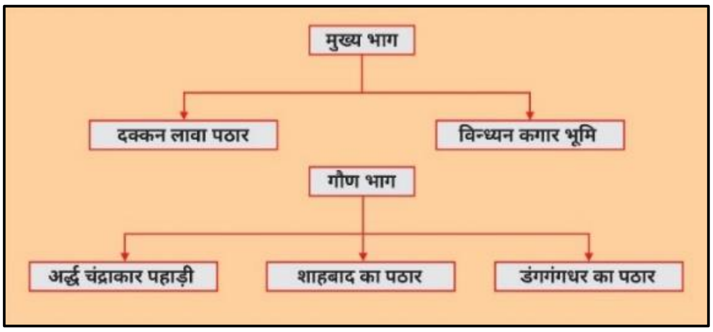

(A). विंध्यन कगार भूमि (Vindhyan Scarpland)-

❖ **क्षेत्रीय विस्तार-**

◈ यह **करौली, धौलपुर, सवाई माधोपुर** जिलों में विस्तृत है।

◈ यह क्षेत्र विंध्याचल पर्वत का अंतिम भाग है।

◈ यह मुख्य रूप से **बलुआ पत्थरों** से निर्मित है।

◈ पत्थरों के रंग क्षेत्रीय आधार पर भिन्न हैं-

◈ **लाल बलुआ पत्थर-** धौलपुर।

◈ **गुलाबी बलुआ पत्थर-** करौली।

◈ **स्लेटी बलुआ पत्थर-** बूंदी।

◈ **कातले/पट्टी-** बिजौलिया (भीलवाड़ा)।

◈ यह **चंबल और बनास नदियों के मध्य** स्थित है।

◈ कगारों का ढाल दक्षिण और दक्षिण-पूर्व दिशा में है।

◈ **चंबल के बाएँ किनारे** पर तीव्र ढाल वाली भूमि देखी जा सकती है।

◈ कगार भूमि की औसत ऊँचाई **350 से 510 मीटर** है।

B. दक्कन का पठार / हाड़ौती का पठार

◈ यह कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़ जिलों में विस्तृत है।

◈ हाड़ौती के पठार में चम्बल और उसकी सहायक नदियाँ जैसे कालीसिन्ध, पार्वती, परवन, मेज आदि ने उपजाऊ मैदान का निर्माण किया है।

◈ **मिट्टी -** काली (बैसाल्ट तत्त्व की प्रमुखता)

◈ **औसत ऊँचाई** 210-275 मीटर ऊँचाई।

◈ इस क्षेत्र में दक्कन लावा की शैल पायी जाती हैं।

1. **अर्द्धचन्द्राकार पहाड़ियाँ-**

◈ **बूँदी की पहाड़ियाँ–** बूँदी जिले में स्थित 96 किलोमीटर लम्बी अर्द्धचन्द्राकार पहाड़ियाँ जिसकी सर्वोच्च चोटी सतूर (353 मीटर) है।
प्रमुख दर्रे – रामगढ़, लाखेरी, खटगढ़, जेतावास दर्रा

◈ **मुकुन्दरा की पहाड़ियाँ-** कोटा – झालावाड़ में 120 किलोमीटर लम्बी विस्तृत पहाड़ियाँ, जो विन्ध्याचल का भाग है। मुकुन्दरा की पहाड़ियों की सर्वोच्च चोटी चाँदबाड़ी (517 मीटर) है।

2. **कुण्डला की पहाड़ियाँ-** कोटा के आस-पास कुण्डल के आकार की पहाड़ियाँ कुण्डला की पहाड़ियाँ कहलाती हैं।

3. **शाहबाद उच्च भूमि क्षेत्र –**

◈ बाराँ के पूर्वी क्षेत्र में 450 मीटर उच्च भूमि क्षेत्र, जहाँ सहरिया जनजाति निवास करती है, शाहबाद उच्च भूमि क्षेत्र कहलाता है।

◈ शाहबाद उच्च भूमि क्षेत्र की सबसे ऊँची चोटी काम्बा (456 मीटर), बाराँ जिले में स्थित है।

◈ **रामगढ़ की पहाड़ियाँ–** बूँदी से बाराँ के मध्य स्थित पहाड़ियाँ, जिसे बूँदी जिले में घोड़े के नाल के आकार की पहाड़ियाँ (हॉर्स–सू) कहा जाता है।

◈ **रामगढ़ क्रेटर**
यह शाहबाद उच्च भूमि स्थित उल्कापिंड से निर्मित क्रेटर झील है। यह राजस्थान का प्रथम जैव विरासत स्थल है।

4. **झालावाड़ का पठार**

◈ यह हाड़ौती पठार का दक्षिणी भाग है।

◈ इसका विस्तार झालावाड़ व बाराँ जिले में है।

◈ इसकी औसत ऊँचाई 450 मीटर है।

5. **डग-गंगधार के उच्च क्षेत्र**

◈ **स्थान:** मुख्यतः झालावाड़ जिले में, हाड़ौती पठार के दक्षिण-पश्चिमी भाग में।

◈ हाड़ौती पठार की सबसे छोटी भू-आकृतिक इकाई।

◈ **औसत ऊँचाई:** 450 मीटर।
पश्चिमी सीमा चम्बल नदी द्वारा निर्धारित।

अभ्यास प्रश्न

1. **कथन–कारण (Assertion–Reason) प्रश्न**
कथन (A): राजस्थान को चार प्रमुख भौतिक विभागों में विभाजित किया जाता है तथा अरावली पर्वतमाला राज्य का प्राचीनतम भौगोलिक अंचल है।
कारण (R): क्योंकि राजस्थान का लगभग 61% भू-भाग थार मरुस्थल से आच्छादित है, इसलिए उसे चार भौतिक विभागों में बाँटा गया है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए—
(a) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(b) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(c) A सही है, परन्तु R गलत है।
(d) A गलत है, परन्तु R सही है। **[b]**

2. **निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए—**
1. राजस्थान स्थित थार मरुस्थल को टेथिस सागर का अवशेष माना जाता है।
2. राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का लगभग दो-तिहाई भाग मरुस्थल है।
3. 'थार' मरुस्थल का कुल क्षेत्रफल लगभग 2,38,254 वर्ग किमी है।
4. थार मरुस्थल मुख्यतः अरावली पर्वतमाला के पूर्वी भाग में स्थित है।
सही उत्तर का चयन कीजिए—
(a) केवल 1, 2 और 3 (b) केवल 1 और 4
(c) केवल 2 और 3 (d) सभी 1, 2, 3 और 4 **[a]**

3. **निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए—**
1. राजस्थान में मरुस्थल राज्य के एक-चौथाई से भी कम क्षेत्र में फैला हुआ है।
2. मरुस्थलीय क्षेत्र में उच्च तापमान एवं निम्न वर्षा पाई जाती है।
3. चरागाहों में कमी, अनियंत्रित पशुचारण एवं वनों की कटाई मरुस्थल विस्तार के कारण हैं।
4. मरुस्थलीय क्षेत्रों की मृदा में लवणीयता एवं क्षारीयता की समस्या पाई जाती है।
सही उत्तर का चयन कीजिए—
(a) केवल 1 गलत है। (b) केवल 1 और 2 गलत हैं।
(c) केवल 2 और 3 सही हैं। (d) सभी कथन सही हैं। **[a]**

4. **राजस्थान के भौतिक प्रदेशों के सम्बन्धों में सही कथन चुनिए-**
1. राज्य के 61.11 प्रतिशत भू-क्षेत्र में पश्चिमी रेतीले मैदान का विस्तार है।
2. राज्य के 9.60 प्रतिशत भू-क्षेत्र में अरावली पर्वतीय प्रदेश का विस्तार है।
3. राज्य के 23.03 प्रतिशत भू-क्षेत्र में पूर्वी मैदान का विस्तार है।
4. राज्य के 6.37 प्रतिशत भू-क्षेत्र में दक्षिण-पूर्वी पठारी प्रदेश का विस्तार है।
(a) केवल 1 (b) 1 और 3
(c) 1, 2 और 3 (d) 3 और 4 **[c]**

5. **संरचनात्मक दृष्टि से राजस्थान के भौतिक स्वरूप भारत के निम्नलिखित में से किन उच्चावच प्रदेशों का हिस्सा है-**
(a) उत्तरी वृहत मैदान, प्रायद्वीपीय पठार
(b) उत्तरी पर्वतीय प्रदेश, उत्तरीय वृहत मैदान
(c) तटीय मैदान, प्रायद्वीपीय पठार
(d) प्रायद्वीपीय पठार, उत्तरी पर्वतीय प्रदेश **[a]**

6. **राजस्थान का दक्षिण पूर्व पठार क्षेत्र:**
(a) हाड़ौती पठार के रूप में भी जाना जाता है।
(b) यह बारां, बून्दी और कोटा जिलों में विस्तृत है।
(c) चंबल इस क्षेत्र की मुख्य नदी है।
(d) चूलिया जलप्रपात भी यहाँ स्थित है।
(e) यह छप्पन के मैदान के नाम से भी जाना जाता है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:
(a) (b), (c), (d) और (e)
(b) (a), (b), (d) और (e)
(c) (a), (c), (d) और (e)
(d) (a), (b), (c) और (d) **[d]**

7. **निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए**

प्राकृतिक भाग	**औसत वर्षा**
अ. उत्तरी-पश्चिमी रेगिस्तान	**1. 12 से 15 सेमी.**
ब. पूर्वी मैदान	**2. 40 से 80 सेमी.**
स. मध्यवर्ती पहाड़ी प्रदेश	**3. 20 से 90 सेमी.**
द. दक्षिण-पूर्वी पठार	**4. 75 सेमी.**

(a) अ-4, ब-3, स-2, द-1
(b) अ-2, ब-3, स-4, द-1
(c) अ-2, ब-3, स-1, द-4
(d) अ-1, ब-2, स-3, द-4 **[d]**

8. **थार मरुस्थल के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए—**
1. सम्पूर्ण थार मरुस्थल रेतीला एवं बालुका स्तूप क्षेत्र है।
2. थार मरुस्थल लगभग 1,75,000 वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है।
3. यह 25 सेमी. सम-वर्षा रेखा के पश्चिम में स्थित है।
4. भालेरी (चूरू) एवं मेंढा नदी घाटी (सीकर) में बरखान प्रकार के बालुका स्तूप पाए जाते हैं।
5. थार मरुस्थल मुख्यतः अरावली पर्वतमाला के पूर्व में फैला हुआ है।
नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए—
(a) केवल 2, 3 और 4 (b) केवल 1, 2 और 3
(c) केवल 2, 4 और 5 (d) केवल 1, 3 और 5 **[a]**

9. **निम्नलिखित पर विचार कीजिए –**
कथन (A): राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी पठारी भाग में औसत वार्षिक वर्षा 80 सेमी. से 120 सेमी. के मध्य होती है।
कारण (R): क्योंकि राजस्थान में स्थित थार मरुस्थल राज्य के पश्चिमी भाग में फैला है, जहाँ वर्षा अत्यल्प होती है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए—
(a) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(b) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(c) A सही है, परन्तु R गलत है।
(d) A गलत है, परन्तु R सही है। **[b]**

10. **राजस्थान के धरातलीय स्वरूपों के सम्बन्ध में कौन-सा कथन गलत है?**
(a) अरावली विश्व की प्राचीनतम वलित पर्वत श्रेणी है।
(b) उत्तर-पूर्वी मैदान सिन्धु नदी द्वारा निर्मित मैदान का भाग है।
(c) प. (पश्चिमी) बालुका मैदान टैथिस सागर का अवशेष रूप है।
(d) दक्षिण-पूर्वी पठार गौंडवाना लैण्ड का विस्तारित भाग है। **[b]**

11. राजस्थान के निम्नलिखित भौतिक विभाजन को पूर्व से पश्चिम के क्रम में व्यवस्थित करें।
(a) पश्चिमी बालू मैदान
(b) अरावली श्रृंखला और पर्वतीय क्षेत्र
(c) पूर्वी मैदान
(d) दक्षिण-पूर्वी राजस्थान पठार (हाड़ौती पठार)
नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:
(a) (c), (b), (d), (a) (b) (d), (c), (b), (a)
(c) (a), (b), (c), (d) (d) (b), (a), (d), (c) **[b]**

12. राजस्थान के भौतिक स्वरूप के संदर्भ में निम्नलिखि कथनों पर विचार कीजिए:
1. महान सीमा भ्रंश (Great Boundary Fault) राजस्थान के भीलवाड़ा जिले से होकर गुजरता है।
2. पश्चिमी राजस्थान के रेतीले मैदान का 41.5% क्षेत्र बालुका स्तूप-मुक्त (Dune free) है।
3. राजस्थान के पश्चिमी रेतीले मैदान के लगभग 60% क्षेत्र में बालुका स्तूप पाए जाते हैं।
4. महान सीमा भ्रंश का विस्तार मुख्यतः कोटा, चित्तौड़गढ़ और सवाई माधोपुर जिलों में देखा जाता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-से कथन सत्य हैं?
(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2, 3 और 4
(c) केवल 1, 3 और 4 (d) उपरोक्त सभी **[b]**

13. झालावाड़ से बीकानेर की ओर सीधी रेखा में यात्रा करते हुए आप निम्न में से किस प्रकार के भौतिक स्वरूपों के क्रम का अवलोकन करेंगे?
(a) भोराट पठार, हाड़ौती पठार, मध्य अरावली
(b) मध्य माही मैदान, बनास बेसिन, बांगड़
(c) विन्ध्यन कगार, बनास बेसिन, भोराट पठार
(d) हाड़ौती पठार, बनास बेसिन, मध्य अरावली **[d]**

14. राजस्थान के 'दक्षिणी-पूर्वी पठार' (हाड़ौती के पठार) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. विन्ध्यन कगार का निर्माण मुख्य रूप से चूना पत्थर और बलुआ पत्थर से हुआ है।
II. दक्कन के लावा पठार पर पाई जाने वाली काली मृदा का निर्माण ज्वालामुखी के दरारी उद्गार से हुआ है।
III. चम्बल और इसकी सहायक नदियों द्वारा बारां और कोटा में 'त्रिकोणीय जलोढ़ मैदान' का निर्माण किया गया है।
IV. उच्चावच की दृष्टि से इस पठारी क्षेत्र को तीन धरातलीय उप-प्रदेशों में विभक्त किया गया है।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सत्य हैं?
(a) केवल I और II
(b) केवल II, III और IV
(c) केवल I, II और III
(d) उपर्युक्त सभी कथन सत्य हैं। **[c]**

15. अरावली पर्वतमाला के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए:
I. अरावली पर्वतमाला थार मरुस्थल के पूर्व की ओर प्रसार को नियंत्रित करती है।
II. यह राजस्थान में एक 'जल विभाजक' के रूप में कार्य करती है।
III. अरावली को राजस्थान की 'जीवन रेखा' कहा जाता है।
IV. इसके पश्चिम से निकलने वाली नदियाँ अपना जल बंगाल की खाड़ी में ले जाती हैं।
विकल्प:-
(a) केवल I और II सही हैं।
(b) केवल I, II और III सही हैं।
(c) केवल II, III और IV सही हैं।
(d) उपर्युक्त सभी कथन सही हैं। **[b]**

♦♦♦♦

1. मौसम (Weather)
- यह वायुमंडल की क्षणिक अवस्था है।
- मिनटों, घंटों या कुछ दिनों तक सीमित होता है।
- उदाहरण- आज का तापमान, बारिश या धूप।

2. ऋतु (Season)-
- यह 2-3 महीनों की समयावधि में विशेष प्रकार की जलवायु दशाओं का प्रतिनिधित्व करती है। उदाहरण- गर्मी, सर्दी, बरसात।

3. जलवायु (Climate)-
- यह किसी स्थान की औसत वायुमंडलीय दशाओं का 30 वर्ष या उससे अधिक का औसत है।

राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करने वाले मुख्य तत्त्व

1. अक्षांशीय स्थिति (Geographical Location)-
- राजस्थान 23°3' से 30°12' उत्तरी अक्षांशों के बीच स्थित है।
- **कर्क रेखा** राज्य के दक्षिणी भाग (डूंगरपुर और बाँसवाड़ा) से गुजरती है, जिससे यह क्षेत्र उष्ण कटिबंधीय जलवायु से प्रभावित होता है। कर्क रेखा के उत्तर में स्थित शेष राजस्थान की जलवायु उपोष्ण कटिबंधीय है।

2. समुद्र से दूरी (Distance from the Sea)-
- राजस्थान समुद्र से लगभग 350 किमी. दूर स्थित है, जिससे यहाँ समुद्री प्रभाव नगण्य है।
- समुद्र से दूरी के कारण क्षेत्र में आर्द्रता कम रहती है और जलवायु शुष्क रहती है।

3. अरावली पर्वतमाला की दिशा-
- अरावली पर्वतमाला दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व दिशा में फैली हुई है।
- मानसूनी हवाएँ इसकी दिशा के समानांतर बहती हैं, जिससे यह वर्षा में बाधा उत्पन्न नहीं करती है।
- इसके परिणामस्वरूप पश्चिमी राजस्थान (थार मरुस्थल) में न्यूनतम वर्षा होती है।

4. समुद्र तल से ऊँचाई-
- धरातल से 165 मीटर की ऊंचाई पर जाने पर 1 सेन्टीग्रेड तापमान में कमी आती है। यही कारण है कि माउंट आबू राजस्थान का सबसे ठंडा स्थान है।

5. वनस्पति की कमी –
- राजस्थान में वनस्पति का घनत्व कम है।
- वन क्षेत्र की कमी से तापमान में वृद्धि होती है और आर्द्रता कम होती है।

6. मृदा की संरचना
- पश्चिमी राजस्थान में रैतीली मिट्टी पाई जाती है, जिसमें जल धारण क्षमता कम पाई जाती है, इसलिए पश्चिमी राजस्थान की जलवायु शुष्क है तथा दक्षिणी-पूर्वी पठारी भाग में काली मिट्टी पाई जाती है, जिसमें जल धारण क्षमता अधिक होती है। इसलिए हाड़ौती के पठार की जलवायु आर्द्र है।

7. धरातल की प्रकृति :-
- स्थलीय भाग की प्रधानता होने के कारण विषम प्रकार की जलवायु दशाएं पायी जाती है।

❖ राजस्थान में ऋतुएँ–

1. ग्रीष्म ऋतु (मध्य मार्च- मध्य जून) -
- 21 मार्च के बाद सूर्य की स्थिति कर्क रेखा की ओर बनती है।
- इसी दिन से सूर्य का उत्तरायण होना प्रारंभ होने से उत्तरी–गोलार्द्ध में ग्रीष्म ऋतु का आगमन शुरू हो जाता है।
- उत्तरी–गोलार्द्ध का सबसे गर्म दिन **21 जून** को माना जाता है क्योंकि इसी दिन सूर्य कर्क रेखा पर लम्बवत् चमकता है।
- सबसे गर्म महिना – जून
- सबसे ठण्डा महिना - जनवरी
- सबसे गर्म जिला - चूरू
- सबसे ठण्डा जिला - चूरू
- सबसे गर्म स्थान - फलौदी
- सबसे ठण्डा स्थान - माउण्ट आबू
- सर्वाधिक दैनिक तापांतर वाला जिला - जैसलमेर
- न्यूनतम दैनिक तापांतर वाला जिला - डूंगरपुर
- ग्रीष्म ऋतु में दैनिक तापांतर अधिक व वर्षा ऋतु में दैनिक तापातंर न्यूनतम होता है।
- सर्वाधिक दैनिक तापांतर वाला स्थान - चूरू
- न्यूनतम दैनिक तापांतर वाला स्थान - माउण्ट आबू (माउण्ट आबू को राजस्थान का शिमला व बर्खोयांसक कहा जाता है।)
- सर्वाधिक वार्षिक तापांतर वाला जिला - चूरू
- न्यूनतम वार्षिक तापांतर वाला जिला - डूंगरपुर
- ग्रीष्म ऋतू में चलने वाली शुष्क व गर्म हवाएं लू कहलाती है।
- **आँधी** - राजस्थान में सर्वाधिक आँधी मई–जून के महीने में चलती है।
- राज्य के पूर्वी एवं दक्षिणी–पूर्वी भागों में जून–जुलाई के महीनों में आने वाले तूफान को **'वज्र तूफान'** कहते हैं। राज्य में सर्वाधिक वज्र तूफान झालावाड़ और जयपुर जिलों में आते हैं।
- राजस्थान में छोटे क्षेत्र में उत्पन्न वायु भंवर (चक्रवात) को स्थानीय क्षेत्र में **'भभूल्या'** कहते हैं।

❖ राजस्थान में चलने वाली पवनों के स्थानीय नाम -
- **पूरवाई -** बंगाल की खाड़ी से आने वाली मानसूनी पवनें।
- **भभूल्या -** राजस्थान में अपेक्षाकृत छोटे क्षेत्र में उत्पन्न वायु भंवर या चक्रवातों को स्थानीय स्तर पर भभूल्या कहा जाता है।
- **समंदरी हवाऐं -** दक्षिणी-पश्चिम दिशा से चलने वाली हवा
- **पूरबा/पूरवाई -** बंगाल की खाड़ी की मानसूनी हवाओं को पूरबा/पूरवाई कहते है।
- **झाला -** वाष्प कणों के साथ चलने वाली लू/गर्म हवा।
- **सीली -** पौष माह में चलने वाली ठंडी हवा
- **तवा -** ज्येष्ठ माह में चलने वाली गर्म हवा
- **लू/ताप लहरी -** ग्रीष्म काल में पश्चिम से पूर्व चलने वाली गर्म व शुष्क तेज हवाऐं।
- **पछुआ/पच्छ्यु/आथूणी -** पश्चिम दिशा से आने वाली हवाऐं।
- **सुरया -** उत्तर-पश्चिम से चलने वाली हवा।
- **डांफर -** उत्तर दिशा में सर्दियों में चलने वाली शीतलहर
- **अर्डाव -** भंयकर आवाज के साथ चलने वाली हवा।
- **धंराऊ -** उत्तर दिशा से चलने वाली हवा।
- **संजेरी -** उत्तर-पूर्व से चलने वाली हवा।
- **चील -** दक्षिण-पूर्व से चलने वाली हवा।
- **लंकाऊ -** दक्षिण दिशा से चलने वाली हवा।

2. वर्षा ऋतु (मध्य जून - सितम्बर) –
- इस ऋतु में सूर्य कर्क रेखा से दक्षिणायन होता है तथा 23 सितंबर को भूमध्य रेखा पर लंबवत चमकता है। 21 मार्च व 23 सितंबर को संपूर्ण पृथ्वी पर दिन व रात की अवधी बराबर होती है।
- जब गीष्म ऋतु में सूर्य उतरायण होता है तब थार के मरुस्थल में निम्न वायुदाब का केंद्र बनता है, इसके विपरीत दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित हिंद महासागर में उच्च वायु दाब का केंद्र बनता है। हवाएं उच्च वायु दाब से निम्न वायु दाब की ओर चलती है।
- दक्षिणी गोलार्द्ध से आने वाली मानसूनी पवनें जब भूमध्य रेखा से उतरायण होती है तब फेरल के नियमानुसार दाईं ओर मुड़ जाती है तथा इन मानसूनी हवाओं की दिशा दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर हो जाती है, इसलिए इसे दक्षिण-पश्चिम मानसून कहा जाता है।

- दक्षिण-पश्चिम मानसून प्रायद्वीपीय भारत के टकराकर दो शाखओं में बट जाता है।

(i) अरब सागरीय मानसून शाखा–

- अरब सागरीय मानसूनी शाखा राजस्थान में सर्वप्रथम बाँसवाड़ा जिले में प्रवेश करती है। अरावली इस मानसूनी शाखा के सामानांतर होने के कारण यह राजस्थान में कम वर्षा करती है।
- इस शाखा से राजस्थान के बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, उदयपुर तथा सिरोही में 10% वर्षा होती है।
- अरब सागरीय मानसून का सर्वाधिक ठहराव तथा सर्वाधिक सक्रियता सिरोही जिले में होती है। अरब सागरीय मानसून की राजस्थान में दिशा दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पूर्व रहती है।

(ii) बंगाल की खाड़ी मानसून शाखा–

- दक्षिण–पश्चिम मानसून की बंगाल की खाड़ी को स्थानीय भाषा में ‘पुरवईया’ कहा जाता है। बंगाल की खाड़ी शाखा राजस्थान के झालावाड़ जिले से प्रवेश करती है। राजस्थान के अधिकांश जिलों में लगभग 90% मानसूनी वर्षा करती है।
- इस मानसून की राजस्थान में दिशा दक्षिण–पूर्व से उत्तर–पश्चिम है।
- इस शाखा से थार के मरुस्थल में वर्षा कम होती है। इसका प्रमुख कारण अरावली का **‘वृष्टि छाया’** प्रदेश का होना है।

नोट -

- **राजस्थान में वर्षा** 'दक्षिण-पश्चिम मानसून' **जून से सितम्बर** के बीच होती है।
- **मानसून का प्रवेश द्वार** राजस्थान में **बाँसवाड़ा** है।
- राजस्थान का **चेरापूँजी झालावाड़** है (स्रोत: सूजस, मई 2022)।
- **मानसूनी पवन** ग्रीष्म ऋतु में **समुद्र से स्थल** की ओर बहती हैं।
- राजस्थान में सर्वाधिक वर्षा **बंगाल की खाड़ी शाखा** से होती है (**कुल वर्षा का 90%**)।
- राजस्थान में मानसून का **पहला प्रवेश अरब सागर शाखा** से होता है (**कुल वर्षा का 10%**)।
- **पिछले 5 वर्षों में वर्षा**- मरुस्थली पश्चिमी रेगिस्तान में वर्षा की मात्रा बढ़ी है तथा मेवाड़ क्षेत्र में जहाँ अधिकतम वर्षा होती थी, वहाँ वर्षा की मात्रा घटी है।
- **सर्वाधिक वर्षा** वाला **स्थान-** (माउंट आबू, सिरोही)।
- **सर्वाधिक वर्षा वाला जिला- बांसवाड़ा, बारां, झालावाड़।**
- **सर्वाधिक वर्षा वाला संभाग- कोटा।**
- **न्यूनतम वर्षा वाला स्थान- जैसलमेर।**
- **न्यूनतम वर्षा वाला स्थान –** समगांव (जैसलमेर)
- **न्यूनतम वर्षा वाला संभाग- जोधपुर।**
- **औसत वार्षिक वर्षा- 57.5 सेमी.।**
- राजस्थान में वर्षा वाले दिनों की संख्या **29** है।
- **मानसून आगमन की सामान्य तिथि- 25 जून।**
- राजस्थान में **90% वर्षा** मानसून से होती है।

❖ मानसून रिपोर्ट -2025 –

- सर्वाधिक वर्षा वाले जिले –
  (1) बारां (159.3 सेमी)
  (2) सवाईमाधोपुर
- राजस्थान में दीर्घावधि औसत (LPA) वर्षा का उच्चतम प्रतिशत सितम्बर में 182% व न्यूनतम जुलाई में 78% दर्ज किया गया।
- 2025 में मानसून अवधि (जून से सितम्बर) में 715.2 MM (71.5 सेमी) वर्षा हुई, जो दीर्घावधि औसत (LPA) का 164% है। यह मानसून सीजन के इतिहास की दूसरी सबसे ज्यादा बारिश थी।
- राजस्थान में वर्ष 1901 से 1925 के मध्य अब तक की मानसून अवधि में सर्वाधिक वर्षा का रिकॉर्ड 1917 में 88.4 सेमी रहा है।
- **50 सेमी. वर्षा रेखा**- राजस्थान की जलवायु को दो भागों में बांटती है।
- **25 सेमी. वर्षा रेखा** राज्य के उत्तर पश्चिमी मरुस्थल को दो भागों में बांटती है।

विशेष– मानसून अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ – मौसम/ऋतु /हवाओं की दिशा में परिवर्तन होता है।

जुलाई माह की समदाब रेखाएँ

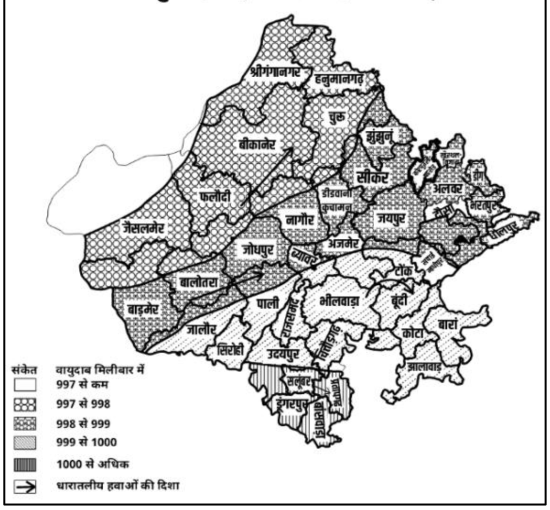

- **997 मिलीबार** - जैसलमेर, बीकानेर, गंगानगर
- **998 मिलीबार** - बाड़मेर, जोधपुर, नागौर, सीकर, चूरू, झुंझुनूं
- **999 मिलीबार** - जालौर, पाली, अजमेर, टोंक, सवाई माधोपुर
- **1000 मिलीबार** - सिरोही, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, झालावाड़

3. शरद ऋतु : (अक्टूबर से मध्य दिसंबर)

- जब सूर्य भूमध्य रेखा से दक्षिणायन होता है तथा 22 दिसंबर को मकर रेखा पर लंबवत चमकता है जिसके कारण उत्तरी गोलार्द्ध में उच्च वायु दाब तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में निम्न वायु का केंद्र विकसित होता है, जिसके कारण हवाएं भारतीय उपमहाद्वीप से दक्षिणी गोलार्द्ध की ओर लौटने लगती है, जिसे मानसून का प्रत्यावर्तन कहा जाता है।
- लौटते हुए मानसून से कोरोमण्डल तट (तमिलनाडु) में वर्षा होती है।
- राजस्थान में लौटते मानसून का प्रभाव **कम** होता है, क्योंकि यहाँ मानसून पहले ही कमजोर हो चुका होता है।
- लौटते समय हवाओं की दिशा उत्तर–पूर्व से दक्षिण–पश्चिम की ओर होती है।

4. शीत ऋतु (मध्य दिसंबर – मध्य मार्च) –

- शीत ऋतु में होने वाली वर्षा को मावट कहा जाता है।

❖ मावठ

- **मावठ का उद्गम**- भूमध्य सागर से उत्पन्न होने वाले पश्चिमी विक्षोभ (भूमध्य सागरीय चक्रवात) ईरान, अफगानिस्तान और पाकिस्तान होते हुए उत्तर भारत में प्रवेश करते हैं।
- ये हवाएँ भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग (राजस्थान, पंजाब, हरियाणा) में हल्की वर्षा करती हैं, जिसे **मावठ** कहा जाता है।
- **समय**- मावठ दिसम्बर और जनवरी माह में होती है और जनवरी में सबसे अधिक वर्षा होती है।
- **मावठ का लाभ**- मावठ को **"गोल्डन ड्रॉप्स" (सुनहरी बूंदे)** भी कहा जाता है, जो रबी फसलों, विशेषकर गेहूँ और चने के लिए बहुत लाभकारी होती है।

❖ जैट स्ट्रीम-

- पृथ्वी के क्षोभमंडल में चलने वाली पवनों को **जैट स्ट्रीम** कहा जाता है।
- शीतकाल में उपोष्ण पश्चिमी **जैट स्ट्रीम** पश्चिम से पूर्व की दिशा में प्रवाहित होती है।
- शीत ऋतु में आने वाला पश्चिमी विक्षोभ इन जैट पवनों द्वारा भारत में आता है।

राजस्थान के जलवायु प्रदेश (भारतीय मौसम विभाग द्वारा प्रस्तुत)

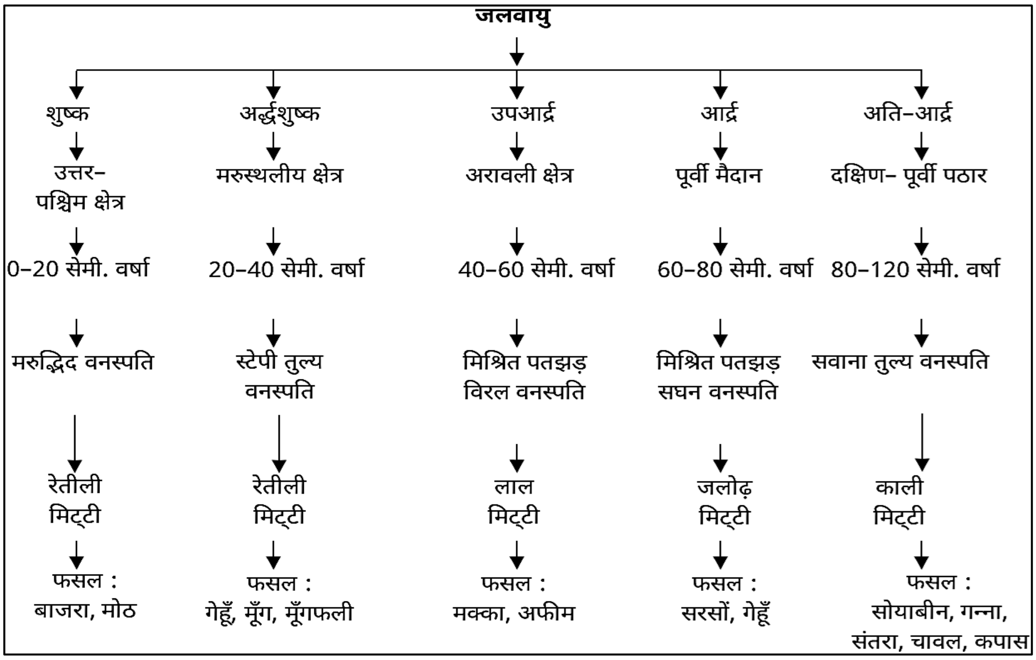

- ◈ वर्षा व तापक्रम के आधार पर पाँच भागों में जलवायु प्रदेश को बाँटा गया है–

1. शुष्क जलवायु प्रदेश–
- ◈ यहाँ वनस्पति बहुत कम है। केवल कंटीली झाड़ियाँ पाई जाती हैं। वर्षा का औसत 10–20 सेमी. है।
- ◈ **विस्तार क्षेत्र –** शुष्क रेतीला मैदान – बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, दक्षिणी श्रीगंगानगर, पश्चिमी जोधपुर।
- ◈ **प्रतिनिधि नगर –** जैसलमेर

2. अर्द्ध शुष्क जलवायु प्रदेश–
- ◈ इस प्रदेश में वर्षा का औसत – 20 से 40 सेमी. रहता है।
- ◈ **विस्तार क्षेत्र –** अरावली के पश्चिम में श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर, झुंझुनूँ, चूरू, नागौर, जोधपुर, पाली, जालोर जिले।
- ◈ **प्रतिनिधि नगर –** जोधपुर

3. उप आर्द्र जलवायु प्रदेश–
- ◈ यहाँ पर्वतीय व पतझड़ वनस्पति पाई जाती है। वर्षा का औसत 40 से 60 सेमी. रहता है।
- ◈ **विस्तार क्षेत्र –** अरावली के समान्तर वाले जिले – जयपुर, दौसा, अलवर, टोंक, अजमेर, भीलवाड़ा, सिरोही।
- ◈ **प्रतिनिधि नगर –** जयपुर

4. आर्द्र जलवायु प्रदेश–
- ◈ यहाँ पतझड़ वनस्पति पाई जाती हैं।
- ◈ वर्षा का औसत 60 से 80 सेमी. रहता है।
- ◈ **विस्तार क्षेत्र –** भरतपुर, सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर, बूँदी, राजसमंद, चित्तौड़गढ़।
- ◈ **प्रतिनिधि नगर –** सवाई माधोपुर

5. अति आर्द्र प्रदेश–
- ◈ यहाँ मानसूनी सवाना वनस्पति पाई जाती है।
- ◈ वर्षा का औसत – 80–100 सेमी. या अधिक रहता है।
- ◈ यह सबसे छोटा जलवायु प्रदेश है।
- ◈ **विस्तार क्षेत्र –** झालावाड़, कोटा, बाराँ, प्रतापगढ़, बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, उदयपुर, माउंट आबू।
- ◈ **प्रतिनिधि नगर –** झालावाड़।

कोपेन के अनुसार राजस्थान के जलवायु प्रदेश–

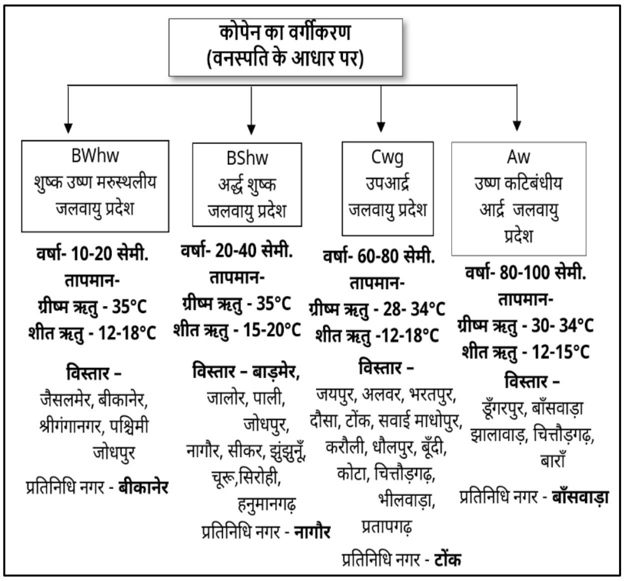

कोपेन का जलवायु वर्गीकरण

❖ **कोपेन वर्गीकरण में प्रयुक्त शब्दावली**

A. उष्ण कटिबंधीय आर्द्र जलवायु

B. उष्ण कटिबंधीय जलवायु प्रदेश

C. उप आर्द्र जलवायु प्रदेश

D. शीतोष्ण जलवायु प्रदेश

E. ध्रुवीय जलवायु प्रदेश

S. अर्धशुष्क

W. मरूस्थलीय

h. औसत तापमान 18°C से अधिक

w. शीत ऋतु शुष्क

g. वर्षा ग्रीष्म ऋतु के पश्चात्

◈ **थॉर्नवेट (1931) ने जलवायु विभाजन** के लिए वाष्पीकरण, वर्षा और तापमान को आधार बनाया। उनके वर्गीकरण में कोपेन के जैसे कई कूट (सांकेतिक शब्द) का प्रयोग किया गया।

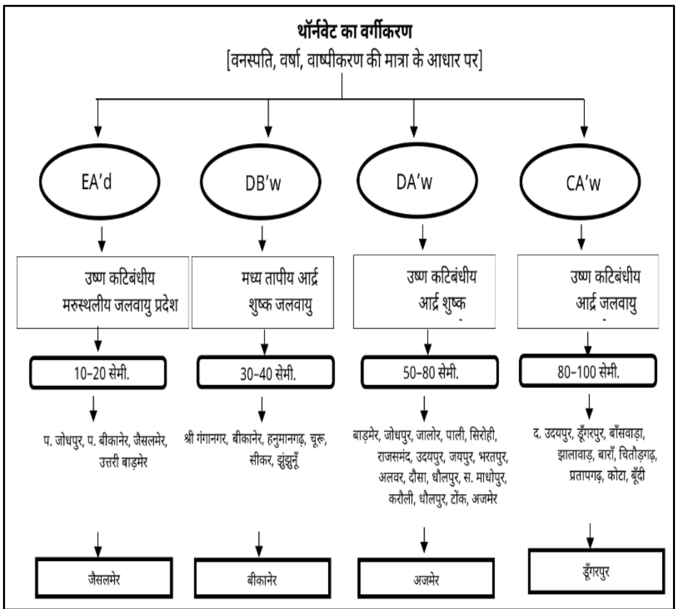

थॉर्नवेट का जलवायु वर्गीकरण

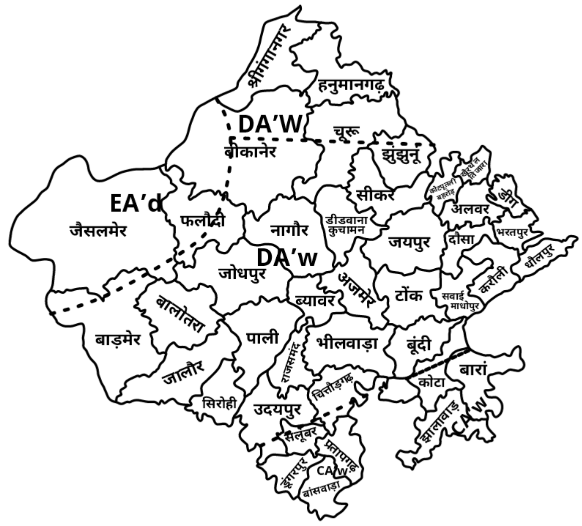

◈ **प्रो. ट्रिवार्था का जलवायु वर्गीकरण –** प्रो. ट्रिवार्था ने कोपेन के वर्गीकरण में संशोधन कर एक नया जलवायु वर्गीकरण प्रस्तुत किया, जो अधिक सरल और आसानी से समझने योग्य है। उनका वर्गीकरण मुख्य रूप से **वर्षा** पर आधारित है।

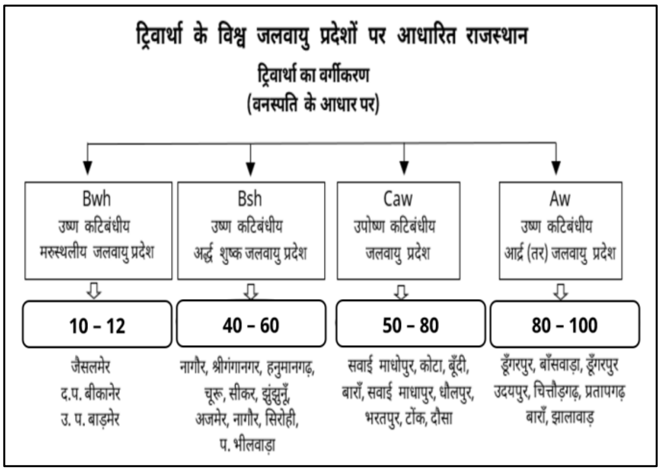

ट्रिवार्था का जलवायु वर्गीकरण

अभ्यास प्रश्न

1. कौन-से कारक राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करते हैं?
1. अक्षांशीय अवस्थिति 2. देशान्तरीय अवस्थिति
3. अरब सागर से दूरी 4. उच्चावच विशेषताएँ
कूट-
(a) 1,4 (b) 1,2,3
(c) 1,3,4 (d) 2,3,4 **[c]**

2. राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए—
1. राजस्थान कर्क रेखा के उत्तर में स्थित होने के कारण शीत कटिबन्ध में आता है।
2. समुद्र से अधिक दूरी के कारण राजस्थान में महाद्वीपीय जलवायु पाई जाती है।
3. अरावली पर्वतमाला की दिशा मानसूनी हवाओं के समानान्तर होने से वर्षा कम होती है।
4. माउंट आबू अधिक ऊँचाई पर होने के कारण अपेक्षाकृत ठण्डा रहता है।
5. पश्चिमी विक्षोभ से राजस्थान में सर्दियों में मावठ की वर्षा होती है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए—
(a) केवल 1 और 2 असंगत हैं
(b) केवल 1 असंगत है
(c) केवल 2 और 3 संगत हैं
(d) केवल 3 और 5 असंगत हैं **[b]**

3. निम्नलिखित में से संगत कथन का चयन कीजिए—
(a) राजस्थान में अधिकांश वर्षा उत्तर-पूर्वी मानसून से होती है।
(b) राजस्थान में कुल वर्षा का 90–95% भाग जून से सितम्बर के बीच होता है।
(c) पश्चिमी राजस्थान में वर्षा की मात्रा सर्वाधिक होती है।
(d) अरावली पर्वत के पश्चिम में अधिक आर्द्र जलवायु पाई जाती है। **[b]**

4. निम्नलिखित में से असंगत कथन का चयन कीजिए—
(a) पश्चिमी राजस्थान में वर्षा की मात्रा बहुत कम होती है।
(b) माउंट आबू में राजस्थान में सर्वाधिक वर्षा होती है।
(c) वर्षा की मात्रा दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर घटती जाती है।
(d) अरावली पर्वत के पूर्व में अधिक आर्द्र जलवायु पाई जाती है। **[c]**

5. निम्नलिखित में से असंगत कथन का चयन कीजिए—
(a) लू गर्मियों में चलने वाली अत्यधिक गर्म और शुष्क हवा है।
(b) लू का प्रभाव राजस्थान, पंजाब, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश में अधिक होता है।
(c) लू सर्दियों के मौसम में चलने वाली ठंडी हवा है।
(d) लू के कारण तापमान बहुत अधिक बढ़ जाता है। **[c]**

6. निम्नलिखित पर विचार कीजिए -
कथन (A): राजस्थान में समुद्र का प्रभाव नगण्य होने के कारण महाद्वीपीय जलवायु पाई जाती है।
कारण (B): क्योंकि राजस्थान अरब सागर से काफी दूरी पर स्थित है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए—
(a) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(b) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(c) A सही है, परन्तु R गलत है।
(d) A गलत है, परन्तु R सही है। **[a]**

7. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए—

सूची-I (कारक)	सूची-II (प्रभाव)
(A) अक्षांशीय स्थिति	(I) महाद्वीपीय जलवायु
(B) समुद्र से दूरी	(II) तापमान में कमी
(C) ऊँचाई (उच्चावच)	(III) अधिक तापमान एवं उष्ण जलवायु
(D) अरावली पर्वत की दिशा	(IV) मानसूनी हवाएँ बिना वर्षा के निकल जाती हैं

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए—
(a) A–III, B–I, C–II, D–IV (b) A–I, B–III, C–IV, D–II
(c) A–II, B–IV, C–I, D–III (d) A–III, B–IV, C–II, D–I
[a]

8. राजस्थान में मई-जून महीनों में उत्पन्न होने वाली धूलभरी आँधियों के लिए उत्तरदायी है-
1. कुछ स्थानों पर संवहनीय धाराओं की उत्पत्ति
2. अरावली पहाड़ियाँ दक्षिण-पश्चिम हवाओं के समांतर है।
3. अति तीव्रगामी पूर्वी हवाओं की उत्पत्ति
(a) 1 एवं 3 (b) 1, 2 एवं 3
(c) 1 एव 2 (d) केवल 1 **[d]**

9. निम्नलिखित पर विचार कीजिए -
कथन- उ. पश्चिमी रेगिस्तान की जलवायु विषम है।
कारण - दिन व रात के तापक्रम में भिन्नता पाई जाती है।
(a) कथन सही है लेकिन कारण गलत है।
(b) कथन गलत है लेकिन कारण सही है।
(c) कथन गलत है और कारण भी गलत है।
(d) कथन सही है और कारण भी सही है। **[d]**

10. राजस्थान की ग्रीष्म ऋतु एवं वाष्पीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए—
1. ग्रीष्म ऋतु में राजस्थान के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में कम वायुदाब का क्षेत्र विकसित होता है।
2. ग्रीष्म ऋतु (जून-जुलाई) में सर्वाधिक आँधियाँ गंगानगर जिले में चलती हैं।
3. राजस्थान में सम्भाव्य वाष्पीकरण-वाष्पोत्सर्जन की वार्षिक दर सर्वाधिक जैसलमेर जिले में पाई जाती है।
4. ग्रीष्म ऋतु में राजस्थान के दक्षिणी क्षेत्र में उच्च वायुदाब व उच्च तापमान का क्षेत्र विकसित होता है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए—
(a) केवल 1, 2 और 3 (b) केवल 1 और 3
(c) केवल 2 और 4 (d) केवल 1, 3 और 4 **[a]**

11. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए—
1. राजस्थान में अरब सागर शाखा से कम वर्षा होने का मुख्य कारण अरावली पर्वतमाला की दिशा है।
2. बंगाल की खाड़ी शाखा अरावली पर्वतमाला से टकराकर राजस्थान में अधिक वर्षा करती है।
3. दक्षिणी राजस्थान में बंगाल की खाड़ी शाखा का प्रभाव अरब सागर शाखा से अधिक होता है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए—
(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3 सभी **[a]**

♦ ♦ ♦ ♦

विज्ञापन

मुश्किल परीक्षाएँ भी आसान लगेगी जब तैयारी होगी लक्ष्य क्लासेस के साथ

लक्ष्य क्लासेज उदयपुर

CET 12th & Graduation level

राजस्थान की अनुभवी टीम, अब एक ही प्लेटफार्म पर

OFFLINE & ONLINE LIVE FROM CLASSROOM AND RECORDED COURSE

Lakshya Classes Udaipur
Lakshya classes
In-app purchases
Uninstall | Open
About this app
E – Learning Education for Exams: REET MAIN, CET RAS, RPSC, RSMSSB Etc.
Education | Study guides
4.6★ 9K reviews | 3+ Rated for 3+ | 1M+ Downloads
LAKSHYA CLASSES APP | AFFORDABLE Quality Education | RECORDED ONLINE COURSES | TEST SERIES Practice & Improve
Data safety

Anil Choudhary Sir – Math And Reasoning
Rahul Sir – Science
Ratan Sir – Rajasthan History
S.K. Sir – Rajasthan Geography
Nagvinder Sir – Indian & Rajasthan Polity
Pankaj Sir – Art & Culture
Mukesh Sir – हिन्दी

SIKSHA MANDIR

Scan to Download Lakshya App Now
Google play

MRP : ₹ 140

व्याख्यात्मक हल
लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
के यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध

क्यों हैं लक्ष्य क्लासेज विशेष?

- व्यापक अध्ययन सामग्री
- MCQ की बुकलेट
- नियमित टेस्ट सीरीज
- पूर्णत: समर्पित यूट्यूब चैनल
- मासिक करंट अफेयर्स मैगज़ीन
- लाइब्रेरी सुविधा
- ऑनलाइन एप्लीकेशन एक्सेस
- अनुभवी एवं योग्य फैकल्टी
- सुसज्जित स्मार्ट क्लासरूम
- नियमित काउंसलिंग

S.No.AP0131 CODE : APDO(35) NRT

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान
लक्ष्य क्लासेज™

M. 9079798005, 6376491126
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur